

टटका गप्प



टटका गप्प

[गल्प - संग्रह]

सम्पादक

प्रो० प्रबोध नारायण सिंह

प्रकाशक :—

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

१४ बी०, ब्रजनाथ मिस्त्र लेन,

कलकत्ता-६

मुद्रक :—

श्री बाबू साहेब चौधरी,

मैथिली आर्ट प्रेस,

६/१, खेलात घोष लेन,

कलकत्ता-६

प्रथम संस्करण

जानकी नवमी, सम्वत् २०२१

मूल्य :—एक टाका पचीस नवका पैसा

आमुख

आइ मैथिली क मान्यता विषयक समस्या हमरा लोकनिक समक्ष बड़ विषम एवं विकट रूप धारण कएने अछि । विरोधी तत्त्वक आरोप अछि जे मैथिली मे बहुत कम ग्रन्थक प्रकाशन होइत अछि । मिथिला संघ, कलकत्ता क नेता लोकनि देशक प्रत्येक मैथिली-सेवी संस्था सँ अनुरोध कएने छलाह जे सम्प्रति अधिकाधिक ग्रन्थक प्रकाशन हो । तँ एहि पुस्तक क प्रकाशन-द्वारा 'मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड' सेहो अपन श्रद्धा-प्रसून क निवेदन कए रहल अछि । आशा अछि, मैथिली क श्रद्धालु पाठक हमरा लोकनि केँ प्रोत्साहित करताह ।

—श्री रामकृष्ण ठाकुर
मैनेजिंग डाइरेक्टर,
मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
कोन महल नाम रखवै एकर—श्री काञ्चीनाथ भा 'किरण'	५
ओ दूनु—	श्री मणिपद्म १३
पुरान पत्र आ टटका बात—	श्री रामकृष्ण भा 'किसुन' १६
नरक—	प्रो० शैलेन्द्र मोहन भा २६
स्वप्न-भङ्ग—	श्री ललित ३४
एकटा चिनमा खयलिये रौ भैया—	प्रो० मायानन्द मिश्र ४४
बन्हकी—	प्रो० 'धीरेन्द्र' ५०
समाधि बजैत अछि—	श्री शम्भूनाथ बलियासे 'मुकुल' ५८
कुपुरुष क खोज—	सुश्री इला रानी सिंह ६७
माटिक सुराही—	श्री उदय सिंह ७१

कोन महल नाम रखवै एकर ?

श्री काञ्चीनाथ भा 'किरण'

‘जेठक दुपहरिया भादवक राति । माघक भोरवा अभागल बहराथि !’ एहि कहबी केँ जनैत रहितहुँ विदा भेलहुँ ठीका-ठीक चारहे बजे ! हँ, मास चैत छलै सेहो सुरूहे चैत ! चैतक नाम सुनि साहित्यक मधुमय ऋतु मनमे नहि लायब । रौद खूब तीख रहै । पछवा धुरभाड़ । कौशिकीक आङन ! हिन्दी-उर्दूक आघात सँ विध्वस्तप्राय मिथिलाक संस्कृति ओ साहित्यक समान बाट ! जन-कार्य विभाग, जिला परिषद, क्यो ओकर रक्षक नहि बुझि पड़य । जनता अपन श्रम सँ ठाम-ठिम अस्तित्व रखने छलै । तेँ मैथिली-साहित्येक समान जीवित धरि छल । लोक केँ ओहि सँ लाभ नहिए सन होइ छलै ।

हकासल पिआसल, निछोह साइकिल चलौने जा रहल छलहुँ, मैथिली-साहित्यकारक समान । ने कतहु पोखरि-इनार, ने छाहरि ओ गाछ-वृक्ष ! भौआ, कास, पटेड़, बंका जतेक

ली ! जंगली प्राणी मे बनगदहा आ' गिदरक दर्शन बेस होइ छल ।

मन औआय लागल ! कतेक काल धरि स्थिर रहि सकैछ मनुष्यक मन, विनु अन्न-पानिक ? विनु स्वागत सत्कारक ? साहस विचलित होबय लागल ! परन्तु पुरुषत्व मन पाड़ि दैत छल, मैथिलीक साहित्यकार केँ !

यदि ओ सभ विनु लाभ-लोभक, विनु स्वागत समादरक, निर्धनताक ताप केँ तुच्छ बुझैत, अपन पथ पर अड़ले छथि आ' जीवन भरि अड़ले रहता तँ हम दश-बीस कोसक बाट केँ कियेक ने पार करब ?

काटि जाइ, एहि गुन-धुन मे कतेको दूर बाट ! किन्तु वास्तविकताक उपेक्षा कस्माक सामर्थ्य ककरा छै ? विनु अन्न-पानिक, मन केँ अटल राखि सकैत अछि लोक, से सत्य परन्तु तकर संग इहो सत्य जे अन्न-पानिक अभाव मे देह सुखैबे करतै, अटबल होयबे करतै आ' अन्त मे अकार्य्यक भए नष्टो भए जेतै !

छाहरि ओ जलक विना शरीर शिथिल होबय लागल । आँखि बाट केँ छाड़ि, चारू दिशि गाछ केँ ताकै मे लागि गेल । कैक बेरि खसौ लागलहुँ । तथापि आँखि, बाट पर नहि आबय ।

अनुमान पाव भरि दूर मे, एक गाछक धूमिल चित्र आँखि मे पड़ितहि, बल जेना बढ़ि गेल । पायर दुगुन्ना वेग सँ साइ-किल चलबय लागल !

सांसारिक सुख केँ मिथ्या कहि, पंडित केहन ठकान ठकैत अछि लोक केँ ? गाछ, बाटक काते मे एक महार पर छल ।

पोखरि तँ बौद्ध-धर्म जकाँ विलीन भय गेल रहै, केवल महारटा स्तूप समान ओहि पोखरिक अतीत वैभवक परिचय दय रहल छल ।

गाछ छल आमक । नवगछुली । डेढ़ दू हाथ मोट । खूब भमटगर ! पात, सभटा लाल, लालटेस, कोमल । लाल साड़ी पहिर ने निर्मल बालिकाक बीच मे प्रसन्न-मुख नव दुलहाक समान, कलसक बीच बीच मे मजर । अगणित मधुप कोबर गीत गवैत । बुझि पड़ल, समस्त कोशी क्षेत्र सँ विताड़ित वसन्त ओही गाछ पर निवास करैत छल ।

गाछक चारूकात केँ ल' क' बेस चौखुट, भरि छाती ऊँच चिकनि माटिक चबुतरा ! गोबर सँ नीपल ! हरिअर । गाछक जड़िक लग मे एकटा धुपदानी आ' एकटा दिवारी राखल । जाहि सँ स्थानक पवित्रता मूर्त भय रहल छल । चबुतराक एक कोन पर चारिटा नवे नव घैल, जल सँ भरल रखने एक व्यक्ति बयसेँ युवक किन्तु शरीरेँ स्वास्थ्येँ जीर्ण, हृदये महान परन्तु परिच्छदेँ हीन—दीन, बैसल छल । हमरा देखितहि ओकर मुख जेना फुला उठलै । आँखि मे चमक आवि गेलै, परिचित-प्रेमी-बन्धु जकाँ चट आगाँ बढ़ि, हमर हाथ सँ साइ-किल लए, चबुतरा मे ओठडा देलकै आ हमरा हेतु पटेड़क पटिआ बिछा देलक ।

मरुभूमि सँ सहसा वासन्ती सौन्दर्यक साम्राज्य मे पहुँचब, आशा-कल्पनातीत घटना भय गेल । ओहि आकस्मिक परिवर्तनक प्रभाव केँ, ने शरीरे सम्हारि सकल, ने मने । चट पड़ि

रहलहुँ हम पटिआ पर । आँखि ओहि तरुण गाछक सौन्दर्य केँ स्मृति मे दृढ़ रूपेँ अंकित करैक लेल बन्द भय गेल ।

युवक हमर पायर केँ कोमल हाथेँ खूब जल द' द' धो देलक । शरीरक गर्मी जेना चल गेल । आँखि खोलल तँ देखैछी युवक बीअनि घुमा रहल अछि हमर माथ पर । आ' माँजल लोटा मे जल भरल लग मे राखल अछि । बंसि भरि छाक जल पीलहुँ आ' ओठडि गेलहुँ गाछ मे ।

हमरा भेल क्यो लक्ष्मी-पात्र व्यक्ति, ओहि मरु-भूमि मे जलक व्यवस्था केने छथि, परन्तु से छल नहि । ओ महा पुरुष जे हमर पायर धोने छल, स्वयं छल ओहि प्राण-निकेतनक कवि !

दिन भुकि गेल छए, जैबाक छल दूर । तेँ विदा भय गेलहुँ मुदा मन केँ छोड़नहि । तेँ घुरती बेरि कृत्रिम क' क' दशे बजे पहुँचि गेलहुँ । ओ महापुरुष पूर्ववत मानव-पूजाक लेल प्रस्तुत छल । हँ, हम पूर्ववत नहि रहि गेलहुँ । भेष-भूखा केँ पैघक आधार मानबाक कुसंस्कार सँ पहिल दिन हम ओकरा कोनो धनी व्यक्तिक नोकर मानि लेने छलिये ताहि सँ आत्मा लज्जित भए आँखि खोलने छल । प्रच्छन्न महा मानवताक परिचय पाबि गेल रही । अतः सतर्क भय गेल छलहुँ । कतेक व्यक्ति ओहि गाछतर जिरायल-सुस्तायल छल । लोटाक लोटा जल ढकोसने छल । परन्तु हमर जकाँ, प्रायः क्यो कौतुहल नहि देखौने छलै ओकरा लग । ओकर मानव पूजाक सम्बन्ध मे ! ओहि गाछक सम्बन्ध मे ! तेँ हमरा अपन पूर्व जन्मक बन्धु मानि लेलक आ तेँ अपन जीवन कथा कहि देलक एके अध्याय मे ।

दश-बारह वर्ष पूर्व ओकर दुरागमन भेलै। ता' कोशी आवि गेल छलथिन। हुनक लोक-संहार-लीला आरम्भ भय गेल छलनि। माय-बाप दुनू गोटे तीन दिनक भितरे मरि गेलथिन, ओही साल।

दुनू बेक्ती टा रहल आङन मे ! दोसर क्यो छलैके नहि, तेँ दुनू गोटेक जीवन-सम्बन्ध निर्वाध रूपेँ एक होइत गेलै।

स्त्रीक नाम छलै सिनुरी। स्वभाव अत्यन्त कोमल, सरल, पवित्र तथा मधुर ! कौशिकीक बाढ़ि, अन्न-वस्त्रक कष्ट जेना दुनू व्यक्तिक प्रेम केँ दृढ़ करैत गेलै। ओतबे वयस मे ओ संग-समाजक मायक स्थान पावि गेलि छलि। बेर-विपत्ति, रोगीक पथ-पानि सेवा सुश्रुता, टोल मे ककरो नहि खगाय दै। बड़ मधुर जीवन जा रहल छलै दुनू बेक्तिक।

तीन वर्ष बाद ! भादव मास। सौंसे गाम जल-मग्न भय गेल। घरे-आङने पानि दुकल छलै। एक ओ मोहार टा जागल रहलै।

लोक सभ पड़ा' क' कि तेँ आन गाम चलि गेल ने त ओही महार पर डेरा देलक। ओकरो डेरा ओही महार छलै।

नीचा जवका। उपर सँ बरखा। दुखित पड़ि गेलै सिनुरो ! दवादारूक कोनो उपाय छलैके नहि। चलि गेलै ओकरा एक-सरे छाड़ि, एहि संसार सँ ! कतौ दोसर भूमि जागले ने छलै। जारनि अलभ्य। मुखवत्ती लगा' क' गाड़ि देलक ओ अपन सिनुरी केँ ओहीठाम।

धिया पुता भेले ने छलै। मेटा जैतै ओकर नाम ! तेँ ओकर स्मारक, ओकरे सारा पर, मधुर सिनुरिआ आमक गाछ

रोपि देलकें । सयह छल ओ गाछ ! ओकर विगलित स्वर मे, डवडवायल आँखि मे असंख्य अजविलाप काव्य विलीन भय रहल छल !

गामे ऐवाक छल । पक्ष इजोरियाए छलै ! भरिपोख गप्प केलहुँ, सुस्तेलहुँ, सुनलहुँ, ओहि मातृ-हृदया-नारीक चरण लग ! साँझक म्वणिम किरण मे गाछ केँ बारंवार देखलहुँ । आ' अतृप्त नयने', उद्वेलित हृदये' विदा होयवाक उपक्रम केलहुँ तँ ओ महापुरुष दौड़ि क' अपन गोहिया सँ, जे गाछक लगे मे छलै, एक सरवा मे अँकुरी आनि देलक । हम ओकरा प्रसाद मानि महर्ष म्या' लेलहुँ । भरि छाक जल पीबि लेलहुँ आ मने मन प्रणाम आ उपर उपर हाथ जोड़ि नमस्कारक अभिनय कय विदा भय गेलहुँ ।

आँखि बाट केँ तकैत छल, परन्तु मन खनहि ओहि गाछक लग खनहि आगराक 'ताजमहल' लग पहुँचय लागल !

कतेक काव्य बनल अछि ताजमहल पर ? कतेक तथाकथित सहृदय कविकलाकार ताजमहल केँ देखय जाइत छथि आ शाहजहाँक प्रेमक प्रशंसाक गीत गवैत छथि ?

परन्तु ताजमहल थीक की ? शाहजहाँक प्रेमक प्रतीक कि हुनक वैभव प्रभुत्वक प्रतीक ? कोन कृतित्व अछि ताजमहल मे, शाहजहाँक ? नकसा वास्तुकलाविदक ! ल्हरि निर्माणकर्ताक ! परिश्रम मजूरक ! आ' धन, जनताक !

जाहि प्रेम केँ हम सब पवित्र कहै छिऐ, से मानवेटाक हृदय वस्तु थीकै ! लाखों लोकक खून, शोषण, अपमान, गज्जन

पर जकर महत्ता निर्भर छलै ताहि शाहजहाँ-मुमताजक हृदय मानवक हृदय रहलै कहिया ? भेलै कहिया ? शाहजहाँ मुमताजक प्रेम केँ पवित्र हेवाक अवसर कहाँ भेटलैक ? पाषाण हृदय द्वारा पाषाण हृदयाक स्मारक पाषाणेक त भेलै कि ने ?

मुमताजक बाह्य सौन्दर्य छल शाहजहाँक प्रेमक आलम्बन, आ प्रेमो छल बाह्य सुन्दरे । तेँ ताजमहलक विलक्षणतो तँ अछि बाह्य सुन्दरते !

आ' आइ जे स्मारक देखलहुँ से ? देखितहिँ बुझि जेवँ जे स्मारक बनौनिहार क हृदय मानवक धिकै, सिनुरीक शरीरक सुन्दरता नहि, ओकर हृदयक असीम मातृत्व, अपार मानव-कल्याण-भावना छलैक प्रेमक आधार ! पवित्र-प्रेमक पयोधि अछि स्मारक निर्माताक हृदय मे ।

तेँ एहन, सुन्दर, सजीव लोक कल्याणकर स्मारक भेलै कि ने ?

एकर निर्माण वैभव-प्रभुत्व सँ नहि, वेदनाक बल सँ भेल छै ! तेँ रामायण काव्यहुँ सँ सुन्दर अछि, कि ने ?

'ताजमहल' कोजागराक राति मे सभ सँ सुन्दर अछि, परन्तु एकर सौन्दर्य ग्रीष्मऋतुक दुपहरिया मे मधुरतम बनि जाइछ । शिशिर वर्षा कोनो ऋतु एकर सुखद सौन्दर्य केँ घटा नहि सकैछ । शाहजहाँ अपन महल सँ निर्निमेष नयने ताजमहल केँ देखैत रहैत छला !

आ' ई महामानव ! गाल्छक तर मे रहि, रौद बसात सँ पीड़ित असहाय मानव केँ जीवन-दान देबक लेल आकुल नयनेँ चारु दिसि ताकैत रहैछ !

मुमताजक शरीर ताजमहल मे गड़ल सङैत सुखाइत पड़ल रहि गेल । परन्तु "सिनुरी"क शरीरक अणु-अणु अपन स्मारकक शरीर मे प्रवाहित भए ओहि मे सिन्दुरीक मधुर गुण भरि रहल छै ।

तेँ ने ओकर स्मारक ब्रम्हा जकां अपन कान्त किसलयक लालिमा-हरीतिमा सँ मानवक नयन केँ जुड़बैत किशोरी जकां मंजरक मनोहर मादक सुगन्धि सँ लोक केँ मुग्ध कय दैछ, दिशा केँ आमोदित कय दैछ, आ' मधुप-बालमण्डल केँ मधु चटबैत अछि ।

ओ दूतू

“मणिपत्र”

रेखा बहुत अधिक व्यथित भ उटलीह । सांचे युग सन सन चारि मास बीत गेल । हुनक प्रवासी पति एक्को पाँती नहि पठौलथिन्ह । सोमहां क सिम्भर फूल से लाले लाल भ गेल छलैक आ पीपर खूब चमकैत चिक्कन आ कोमल पातक नव बख पहिर नेने छल । चारूकात घर आ छहरदिवारी । घर सँ आंगन आ आंगन सँ घर । हुनका आंखि मे रहि रहि कै नोर छलछला आवैन्ह । “ह ह; उपेक्षाक हृद भ गेल । हुनका मोन मे मौनिक पानि जकाँ ई बात चक्कर काटैन्ह ।

प्रिय जनक चिंताक काल मे सवटा अशुभे बात मोन मे उचरैत रहैत छैक ।

“भ सकैत छैक ओ ककरो प्रेमपाश मे पड़ि गेल होथि । संसार मे एक सँ एक सुन्नरि होति अछि आ नटिनियां सब छवियो छटा तेहने वनौने रहैत अछि जे पुरुष देखितइ लोटि खसय ।”

कखनो-कखनो ओ सोचै लागथि —“तखन दिन गुजर कोना चलत ? कमाइ त कहुना होइते हेतैन्ह । सेहो पाइ पैसा पठोनाइ बन्न केने छथि । आ जौ जीवन भरि लेल छोड़िये दैथि ! पुरुख क कोन ठेकान !”

ओ आंगन मे बैसलि आकाश दिस ताकय लगलीह । माथ क उपर दलक दल पक्षी उड़ैत चल जाति छल ।

“कोनो रोक टोक नहि । जतै मोन होति छैक ततै जाति अछि ।” ओ अपना मोन मे कहलैन्ह ।

चिंता, उद्विग्नता आ व्यथा जेना हुनका बिहारि मे ठाढ़ सिंगरहारक गाछ जकां मोचरने जाति छलैन्ह ।

“मालिकिनी, कड़हड़ लेबैक ।” ड्योढ़ी पर सँ क्यो कहलकैन्ह ।

रेखा अपना व्यथा कें विसरइ लेल कहलथिन्ह—“देखियौ, केहेन छैक कड़हड़ ?”

एकटा मुसहर ललना माथ पर एकटा पैघ ढाकी नेने आंगन आयल आ अनायासे माथ पर सँ कड़हड़ क ढाकी उतारि कै नीचा मे राखि लेलक ।

सुगठित देह । माँगुर मात्र सन छह छह करैत रक्ताभ कारी रंग । पुरनिक पात सन चिकन मुँह घोंघारी सन सन छोट छोट आँखि आ पट राखल खुरचन सनक नाक । गरदनि मे दू छर करजनीक माला । असाधारण रूप सँ चमचम करैत दंत-पंक्ति । उरोज तेहेन पुष्ट आ दृढ़ जेना भौरा पाथर कें कुनि कै बनाओल गेल हो ।

रेखा एक बेर अपना पिरोन शरीर दिस तकलैन्ह आ एक बेर ओकरा दिस । बयस क समता रहितौ स्वास्थ्य मे कते अन्तर छल ? रेखा छली खूब यत्नपूर्वक राखल ओ पटा-ओल, गमला क पिलपिलाइत करोटन जकाँ क्षीण आ अम्लान आ ओ कड़हड़ वाली छलि ईटा-भट्टा पर क भुअरगर पीपर क गछुली जकाँ, बिना पटौनइ लहलह करैत, बिना यत्नै क मस्ती सँ भूमैत ।

रेखा केँ ओकरा देखितइ जेना ठकमुड़िया लागि गेलैन्ह ।

“देखू एकर सुन्नरताइ । के कहैत अछि जे गोरे चामटा सुन्नर होति छैक । सब सँ बड़का सुन्नरताइ छिएक स्वास्थ्य । एकटा छी हम सब । खोआ खाय से गलल जाय । हरदम भबौनिये नेने रहैत अछि ।” ओ मोनइ मोन कहलैन्ह ।

“गिरहथनी, हालि सनी लेवइ त लिऔ ।” कड़हड़वाली कहलकैक ।

“हइ एक रत्ती बैसेवो कर ।” रेखा मुस्कुराइक प्रयत्न कैलन्हि—“घरवाला बिना एक्को घड़ी नइ रहल जाइ छौ की ? हरदम त संगइ रहैत छै, गाछी, बिरछी, चर, चांचर आ खेत मे त घरा जोड़ी केनइ रहैत छै ।”

कड़हड़वाली भभा कै हँसि पड़लि “गां मे नइ छइ मालिकिनी । कमाइ लै पूव गेलइ ग ।”

रेखा हँसली—“बैस बैस । बैसमे त हम दू सेर कड़हड़ लेल दू सेर मड़ुआ देवौ ।”

कड़हड़ वाली भूँइयाँ पर बैसि गेलि । “ऐं गो, साड़ी देगइ

छियौ लाल । घरवाला पूव सँ पठा देलकौ की ?” रेखा पुछलथिन्ह ।

“अपने छागर बिकायल छल तकरे किनलौ ।” कड़हड़-वाली क उत्तर मे मस्ती छल ।

“की ना छियौ ?” पुनः प्रश्न कैल गेल ?

“करजनी” उत्तर भेटलैन्ह ।

“घरवाला कें पूव गेना कत्ते दिन भेलउ ? समाद वारी आवइ छौ की नहि ?” रेखा क प्रश्न मे उत्सुकता छल ।

“बहुत दिन । कमला मे पहिले बाढ़ि ऐल छलइ त गेलइ ।” करजनी क आंखि चमकि उठलइ ।

“ऐं गइ; त दिन गुजर कोना चलइ छौ ?” रेखा विस्मित स्वर मे पुछलथिन्ह ।

“हमरा की लुल्ही लागि गेल अछि ग ? कन साग बेचि कें गुजर करइ छी ग । धान कटलौ ग । खुभी जमा कें बेचलौ ग । चून वाली कें डोका देलियै ग ।” ओ मस्ती सँ वाजल ।

“से त भेलउ ।” रेखा खौभा उठली—“घरवाला कखनउ मोन नइ पड़इ छौ की ?”

“मोन कियै ने पड़इ छइ । काजक पाटू तत्ते बेहाल रहइ छियै जे मोन पड़ैक छुट्टिये ने रहइ छइ । कहियो कहियो एसगर दोसगर मे चुपे चुपे कननी लागि जाइ छइ ग ।” करजनी कनिये अम्लान भ उठल ।

करजनी क अम्लान भेनाइ रेखा कें जेना अधिक सुखद बूझि पड़लैन्ह । हुनका मन मे ओकरा प्रति एकटा अज्ञात ईर्ष्या अंकुरित भै आयल छलैन्ह ।

“आ जौ तोहर घर-बला कोनो तोरउ सँ नीक मौगी कें राखि लौ आ तोरा छोड़ि दौ ? घुरि कें घर नइ अबौ, कहियो ने खोज करउ तखन की करमे ?” ओ ओकरा कलेजा मे बाण मारैक प्रयत्न केलथिन्ह ।

मुदा हुनकर बाण एकदम विफल गेलैन्ह । करजनी भभा कै हँसि पड़ल —“क ने लै होइ छइ ग । आ पांचे टा ल आनत त हम की करबै ग । अपन समांग रहल ताकइ ग । मरद क भरोस कै दिन राखवइ ग ?

रेखा धुन्ध भ उठली—“ऐं गइ, त साफ कहइ ने जे दोसर पुरुष कै लेबहिन ।”

“मालिकिन ठट्टा करइ छियै ग ? जा तक पुरुष जानि ममानि आ मारि पीट कें नइ निकालि देतइ ता तक अपनइ दोसर पुरुष कोना करवइ ग ? आ ओ नइ राखै चाहतइ त गोड़मुड़िआ ध क रहबौ ने करवइ ग ।” करजनी क स्वर मे जेना अनायासे दृढ़ता आवि गेलैक ।

“जौ तोरा घरबला कें समाद बारी दइ मे, की गां आवइ मे विलम होइ छइ त तोरा मोन मे नइ ठेहकइ छौ जे ओ कोनो आन मौगी कें त ने ध लेलक ।” रेखा स्वर कें संयत रखैक प्रयत्न केलैन्हि, मुदा मुदा कननमुँह भ उठलैन्ह ।

करजनी क दंतपंक्ति चमकि उठलैक आ आंखि ओ कपोल पर जेना नववधू क लाज खेलि गेलैक—“हमर हेतइ त कतउ ने जेतइ ग मालिकिनी । अपनइ मोन मे पाप कियै राखवइ ग । हमरे दू कर अन्न की दू हाथ बस्तर लेल त रने-वने कमाइ लै

गेलइ ग । गां आवइ लेल त ओ पानि बिनु माछ जकां छट-
पट करैत हेतइ ग आ तैपर हमही मोन मे ओकरा पर भरमो
करवइ ग त कतै भ क रहवइ ग ?”

ओकर आत्मविश्वास जेना रेखा केँ छवइत बूझि पड़लैन्ह ।
हुनक विपाद जेना धोखैर गेलैन्ह आ मन निरभ्र आकाश जकाँ
निर्मल भ गेलैन्ह ।

“आ; कइहइ दे ।” ओ कहलथिन्ह—“मइआ देवउ
बरोबरि केँ आ इनाम मे एकटा पुरान साड़ियो देवउ ।”

“करजनी नीक नीक कइहइ बहार करै लागल आ रेखा
मइआ आ साड़ी आनइ लेल हलसल फुलसल घर गेली ।

पुरान पत्र आ टटका बात

श्री रामकृष्ण भा 'किसुन'

प्रिय विनय,

हम स्वयं अपना मन सँ ई प्रश्न करैत छी जे कहिया धरि ई बतहपनी करैत रहब ? मुदा...मुदा उत्तर किछु नहि भेटैत अछि । कहि नहि, जीवन भरि एहि सर्वग्रासी बतहपनीक चक्र सँ उबरि सकब वा नहि !

हाल मे फेर एक दिन एक घटना भऽ गेल अछि । ओहि दिनक बात थिक । मानसी स्टेशन पर पटनाक हेतु ट्रेनक प्रतीक्षा मे अपना मीतक सङ्ग मुसाफिर-खाना मे 'होल्ड आल' ओछा कऽ पड़ैत छलहुँ कि सोभाँ मे देखै छी जे एक परिवार कोन मे बैसल अछि । एक सम्भ्रान्त महिला, एक नववधू आ एक कुमारि कन्या जे भरिसक अपना केँ चिन्हवा-बुझवाक अभिशाप वा वरदान जे कही दुहू सँ अपरिचित छलि । एक बदमास छौंड़ा, जे अपना बदमासी सँ माय केँ तंग कऽ रहल छल । लगे मे बैसल एक वयस्क पुरुष, जे अपना शून्य आ

भावहीन आँखि सँ लोकक आवागमन केँ अन्यमनस्क जकाँ देखि रहल छलाह । हम कने विश्राम करऽक विचारेँ ओछाओन पर बैसबे कयलहुँ कि देखलहुँ जे ओ कन्या टकटकी लगा कऽ हमरे दिस ताकि रहल अछि । हम, जे मनहिमन ई चाहि रहल छलहुँ, ई देखि कऽ प्रसन्न होयबाक बदला खौभा उठलहुँ । मन मे भेल जे ई प्रायः नीक नहि कऽ रहल अछि । एकरा एना नहि करऽ क चाही । शील नामक पदार्थ तँ किछु थिक !...आ कि देखलहुँ जे मीत अपना सर्वान्तःकरण सँ ओकरा आँखिये दऽ कऽ गीड़ि जयबाक इच्छा कऽ रहल छथि ।

मुदा की ई पुरुषक—आजुक युवक समुदायक सभ सँ पेंथ निर्लज्जता नहि थिक ? की ई उचित थिक ? समाजक लेल, नैतिकताक लेल, चरित्रक लेल आ सभसँ बढ़ि कऽ मनुष्यताक लेल ई कतेक कलंकक बात थिक ? हमरालोकनि सामाजिक प्राणी थिकहुँ । समाजे सँ अपने सभ बनैत छी आ अपने सभ सँ समाज बनैत अछि । अपन उत्पादनक धरातल केँ विकृत कऽ की क्यो आगाँ बढ़ि सकैत अछि ? मनुष्य जानि-बूझि कऽ अपना पर बंधनक नियंत्रण लेने अछि । बंधन; हूँ हूँ, हम एकरा बंधने मानैत छिणैक । मुदा ई ओकर शान्तिक हेतु आर प्रजनन शक्ति केँ जीवित राखक हेतु आवश्यक अछि—अनिवार्य अछि । मनुष्य बरबर युग केँ पार कऽ सभ्य आ सभ्यताक उपासक बनल आगाँ बढ़ल जा रहल अछि । किन्तु, विनय, हम पुछैत छियह जे अपन उद्दाम वासनाक शिकार बनल, अपना चारू कात कलुष ओ अविश्वासक वातावरण पसारि कऽ की सरिपहु सभ्यताक आडम्बर रचि कऽ आदिम युगक

असभ्य आ जंगली मनुष्य हमरा लोकनि नहि बनल जा रहल छी ? डारविनक अनुसार जऽ सँ विकास भेल छल, की पुनः ताही दिस मनुष्य प्रत्यावर्तित नहि भऽ रहल अछि ?

मीत दिस तकलहुँ तँ देखलहुँ जे ओ किछु अपूर्व मुद्रा सँ विहसि रहलाह अछि । हमर आँखि अनचोके ओहि कन्या दिस गेल त ओकरा आँखि सँ टकरा गेल । ओ तन्क्षण लाल भऽ उठलि । हमर मन कोना-कोना दन भऽ उठल आ चोटहि अपन आँखि खसा लेलहुँ । पड़ि कऽ एक पुस्तक बहार कयलहुँ आ पढ़-वाक बड़ चेष्टा मे भिड़ि गेलहुँ । मुदा ओ चेष्टा व्यर्थ नहि, विकृत भऽ गेल । तकरा बाद जँ भगवान फूसि नहि बजावधि, ओही अवचेतन रूपेँ ओकरा दिस तकलहुँ, एक बेर दू बेर आ एहि तरहें अनेक बेर ।

एहि बीच मे हमरा अनुभव भेल जे ओ किछु सशंकित अछि—भयभीत अछि । ओकर आँखिक लालसा स्पष्टतः कहि रहल छलैक जे ओ एखन आओर जीवऽ चाहैत अछि, मुदा जेना बलि-वेदीक खड्ग माँजि मूँजि कऽ साफ कयल जा रहल अछि आ ओ डूबल जा रहल अछि निराशाक अनन्त अपरिचित ओ अथाह सागर मे ।

प्रिय बन्धु, तोरा भेटे भेला पर सभ बात खोलि कऽ कहि सकवह । लिखवा मे सभ बात नहि आवि पवैत अछि । संक्षेप मे गाड़ीक एके डिब्बा मे अकस्मान् चढ़ि गेला पर गप्प-सप्पक क्रम मे हात भेल जे एहि कन्याक नाम थिकैक नमिता

आ ओ पुरुष नमिताक पित्ती थिकथिन। गया मे नमिताक पिता नोकरी करैत छथिन। किछु काज छनि तेँ ई लोकनि पटना होइत गया जा रहल छथि। काज ई जे नमिता दाइक विवाह पटनाक सचिवालयक कोनो पैतीस वर्षक बयसाहु किरानीजी सँ होमऽबला छनि। एहन किरानीजी सँ जे एहि सँ पहिने एक पत्नीक स्वर्गपन सँ विधुर भऽ चुकलाह अछि आ से हुनके कन्या देखबक योजना छैक। व्यवस्थाक टाका पर्याप्त नहि दऽ सकबाक कारणेँ हाड़ि कऽ एना करऽ पड़ि रहल छनि। पटना सँ ई काज कऽ लेलाक बाद ई लोकनि गया जाइ जयताह।

तऽरे-तऽर सभक नजरि बचा कऽ हम नमिता दिस तकलहुँ तँ देखबा मे आयल जे ओ पीयर-पीयर सन भेलि हमरा दिस जेना सहायता चाहैत जकाँ अद्भुत याचनापूर्ण दृष्टि सँ बड़े करुण आ दयनीय रूपेँ देखि रहल छथि।

——“तँ की विवाहक सभ निश्चय भऽ गेल अछि आ ओहि किरानियेजी सँ विवाह होयब आवश्यक अछि?” कनेँ प्रगल्भ मुदा मे तटस्थभावेँ हम पुछलियनि। —“की कहलहुँ?” भद्र पुरुष, नमिता दाइक पित्ती, अर्थपूर्ण दृष्टि सँ हमरा पर कने तमसायल जकाँ प्रश्नक उत्तर प्रश्ने मे देलनि ?

——“कहलहुँ जे किछु अवस्था बेसी बूझि पड़ैत अछि।”
——हम कहलियनि।

——“अहाँ की करैत छी?” अकस्मान् ओ सोभे प्रश्न कऽ देलनि।

—“जी, हम ?”—नमिता दिस देखैत, जे विस्फारित नेत्रें हमरा भीजल पिपनी सँ करुणा बरिसबैत देखि रहल छलीह, हम कहलियनि—“हम तँ पटना मे पढ़ि रहल छी । एम० ए० फाइनल थिक एहि वर्ष ।”

देखलहुँ जे नमिता दाइक हृदय हुनका आँखि मे हेलि
रहल अछि आ ओ जेना किछु माँझि रहल छथि ।

हमर पता-ठेकान आ परिचय पात पुछलाक बाद ओ पुनः एक बेर जेना हमर 'सर्वे' करैत सम्पूर्ण शरीर के परीक्षाक दृष्टि सँ देखि कऽ पुछलनि - "विवाहक संबंध मे अहाँक की विचार अछि सुधीर बाबू ?"—"जी ?"—हम कने लजाइत सन कहलियनि—“एखन तँ नहि भेल अछि ।”

देखलहुँ जेना नमिता विकसित भऽ उठलीह । कहलियनि
आ एखन करबोक विचार नहि अछि (नमिता जेना सुरभाय
लगलीह) । हमर अभिप्राय जे (नमिता जेना फेर किछु
माडि रहल छलीह) अवसर अगलापर देखल जयतैक (नमिता
मादक स्मितिक सङ्ग अनुनय अनुरोध, एकान्त विश्वास, अनन्य
आशा, सब किछु एक्के सङ्ग देने जा रहल छलीह जे—अहाँ
हमरा उबारि लियऽ ने ।)

कहि नहि, किएक नमिताक पिती विहुंसि कऽ हमरा दिस
वात्सल्य भाव आ सतृष्ण दृष्टिये^५ देखऽ लगलाह । शेष बात
दोसरा पत्र मे ।

पटना

१८-३-१९५२

तोहर अंतरंग,

सुधीर

(बीचक पत्र नहि भेटल। एक आरो पत्र एहि प्रकारक छल।)
प्रिय विनय,

आइ बहुत दिनक बाद एक अपरिचित लिपिबला लिफाफा खोलला पर नमिता दाइक छोट भाइक टेढ़-टूढ़ अक्षर मे पत्र भेटल जे हमरा बाबूजी आ नमिताक पिता मे सौदा नहि पटलनि। ओतेक टाका नमिताक पिता नहि दऽ सकलथिन आ हमर बाबूजी नहि पावि सकलाह। आ एहि तरहें नमिताक विश्वास टूटि गेलनि आ हमर हृदय टूटि गेल...आ की टाका-पैसाक ई सर्वग्रासी दानव एही तरहें सभ केँ तोड़ि-फोड़ि कऽ अनेक हृदय केँ खा कऽ ढेकरैत रहत ?...आ की आइ विद्रोहक सभ सँ पैघ आवश्यकता नहि अछि ?.. की समाजक एहि भयंकर कंकाल केँ खण्ड-परखण्ड नहि कयल जयतैक ? एहि फूसि आ आडम्बर सँ भरल एहि कृत्रिम जीवन केँ समाप्त कऽ देब अनिवार्य नहि भऽ गेल अछि ? आ बंधन.....? बंधन वा व्यवस्था जे मानव-सभ्यताक सहायक छल, आव मनुष्यता केँ जकड़ि कऽ निर्जीव—निष्प्राण नहि कऽ रहल अछि ? हम ई सभ नहि होमऽ देबैक, विद्रोह करबैक आ तोड़ि-फोड़ि देबैक एकरा। अपना हृदय मे ज्वालामुखी लेने नमिताक लेल, अपन नमिताक लेल हम विद्रोह करब। सोचि रहल छी जे की ई एके नमिताक प्रश्न थिकैक ? की भाइ हजारो-हजार नमिता सभक जीवन पर ई पहाड़ नहि ढहि रहल छैक ? की समाजक एहि पद्धति केँ बदलबाक हेतु, टाका-व्यवस्थाक एहि दुर्दान्त राक्षसक दाँत तोड़बाक हेतु प्रत्येक युवक केँ विद्रोह नहि करक चाही ? ई अवश्य जे

किन्तु व्यक्ति एना करवाक प्रयास कयलनि अछि । मुदा ओ अपवादे थिक । मात्र अपवाद सँ आव काज नहि चलतैक । व्यवस्थाक सुरसा मुँह पसारनहि जा रहल अछि । काटरक टाकाक डाक बढ़िते जा रहल अछि । सभ जाति मे सभ समाज मे भयंकर रूपेँ ई धुधुआ रहल अछि । तेँ सभ जाति आ वर्गमे आव अपवाद नहि, नियम चाही । हम एहि रचनात्मक आन्दोलनक लेल नमिताक सहयोग पयवाक हेतु गया जा रहल छी । शेष दोसर पत्र मे । तोहर स्नेह, सहयोग ओ सङ्गक अटूट विश्वास अछि ।

पटना

३-७-१९५२

तोरे,

सुधीर

(ई दुहू पत्र हमरा ओहि मकानक एक कोन मे भेटल जकरा छोड़िकऽ एक सज्जन दोसरा शहर चल गेलाह अछि आ हम जाहि मे आइ अयलहुँ अछि) ।

नरक

प्रो० श्री शैलेन्द्र मोहन भा, एम० ए०

सुकान्त केँ लगलनि जेना क्यो चाह मे चिरैता घोरि देने हो । फेर पीवाक जी नहि कयलकनि । कप केँ नीचा राखि अन्यमनस्क भऽ गेलाह ।

एक बेर पत्नी दिस तकवाक इच्छा भेलनि । परन्तु आँखि ओतऽ स्थिर नहि रहलनि । सुन्दर चेहरा तामसेँ कोना दन लगैत छलनि ।

ओ खिड़की सँ बाहर दिस ताकऽ लगलाह । पछुअतिक गाछी मे क्यो जारनि तोड़ि रहल छल । सुकान्त नीक जकाँ देखलथिन, ओहि गाछ पर चढ़ल युवक केँ, जे सुग्रायल जारनि तोड़ि-तोड़ि खसबैत छल आ नीचा मे ओकर पत्नी बीछि रहल छलैक ।

सुकान्त बेशी काल एहि दुनू केँ एहि गाछी मे जारनि तोड़ैत-बिछैत देखैत छथि । आइयो ओ एहि दूनू केँ देखैत रहलाह । मनमे नहि कहि, कतेक तरहक बात-बिचार उठैत-मेटाइत रहलनि ।

फेर सुकान्तक मन कोठली मे घूमि अयलनि । वैह निस्त-
ब्धता छल । पत्नी तखनहुँ ओतहि ठाढ़ि छलीह । तामस सँ
चेहरा पहिनहि सन छलनि ...

पत्नी अस्फुट स्वर मे बजलीह—‘एना जे रह्य से बियाह नहि
करय, परिवार नहि बसावय, धिया-पूता नहि जन्माब’

सुकान्त जेना अपन गलती स्वीकार कऽ लेलथिन—‘हँ !
एहि लेल हमरा पर्याप्त खेद अछि । अगिला जन्म मे तँ हम
बियाहक बात सपनो मे नहि सोचब ।’

परन्तु पत्नी केँ लगलनि जे हुनक बात केँ उपहास मे
उड़ाओल जा रहल अछि । व्यंग्य सँ बजलीह—‘परन्तु एहि
जन्मक की होयतैक ? क्यो एहि जन्मक पहिने फैसला कऽ लेअय
तखन दोसर जन्मक सोचय ।’

सुकान्त कहलथिन—‘हमरा तँ नहि किछु फुरैत अछि, अही
कहू जे की करक चाही ?’

‘हम की कहू ! हम के होइत छी कहऽवाली’—पत्नी बजैत
रहलीह ।

‘तखन हमही की करू ? हमरा तँ बुझवा मे नहि अबैत
अछि’—सुकान्त बजलाह ।

पत्नी आक्रोश प्रकट करैत बजलीह—‘सौंसे घर मे तँ हमही-
टा छी अहाँक दुश्मन । भगवान् हमरा बजाइयो नहि
लैत छथि ।’

सुकान्त कहलथिन—‘हुनको अहाँक स्वभाव बूझल होयतनि
...परन्तु ओऽ जयवाक एते’ जल्दी किएक ? यदि एतऽ जी

नहि लगैत हो तँ किछु दिनुक लेल अनतऽ कतहु किएक नहि चलि जाइत छी । हमर मतलब जे

ता बात कटैत पत्नी बजलीह—‘खूब जनैत छी अहाँक मतलब । मुदा हम कतहु नहि जायब । एतहि अहाँक कपार पर बैसलि रहब.....’

सुकान्त बजलाह—बैसलि रहू ! किन्तु कपार पर नहि हृदय मे बैसबाक प्रयास करितहुँ तँ वेशी नीक होइत ।’

पत्नी केँ वेशी बर्दाम्त नहि भेलनि । दूनु आँखि मे नोर छलछला अयलनि । जाइत-जाइत बजैत गेलीह—‘बड़ा अयलाह अछि हृदयबला ! पाथरक हृदय लऽकऽ हृदयबला वनैत छथि.....ग्वाली बियाहक शौख भेलनि ...’

थोड़ेक कालक लेल जेँना आफत टरि गेल हो । सुकान्त चैनक निसास लेलनि ! जानि नहि, आइ भोरे-भोर ककर मुँह देखने छलाह । आर ककर देखने होयताह...वैह तँ भोरे-भोरे आवि कऽ उठा गेलि छलीह...आइ उठब नहि की ? आर कते सुतब...। अर्थान् आव उठू । हमरा सँ बक-भक करवा लेल तैयार भऽ जाउ । बाह रे आमन्त्रण.....भोरे-भोर युद्धक आमन्त्रण.....

सुकान्त फेर खिड़की सँ बाहर दिस ताकऽ लगलाह । देखलनि जे ओ स्त्री ओहिना जारन बीछि रहल अछि । बेर-बेर हटौलो उत्तर एक जिद्दी लट ओकर स्निग्ध कपोल केँ छुबि लैत छैक

फेर ओ ऊपर गाछ दिस तकैत बाजलि—‘आब उतरवो करू ने, कते बेर चढ़ि गेलै ।’

आ सुकान्त देखलनि ओकर पति केँ । गाछपर सँ उतरि मुकुराईत पत्नी दिस तकलक । पत्नी केँ जेना लाज भऽ गेल होइ.....

सुकान्तक आँखि मे बड़ीकाल धरि ई चित्र बनल रहल । सुकान्त आवि कऽ बैसि रहलाह आ सोचऽ लगलाह भोरक घटना केँ...चाहक ओ स्वाद । चाह मे चीनीक कोनो स्वाद नहि होइत छैक । ओ तँ हाथ-हाथक स्नेह होइत छैक जे ओकरा मीठ-माहुर बनबैत छैक.....मुदा अजुका चाह ।

सुकान्त केँ लगलनि जेना हुनकर दम घुटि रहल हो...ओ की करथु ! आखिर पत्नीक असन्तोषक कारण की थिक । ओ सँह नहि बुझि पबैत छथि । बुझथिन किएक नहि...खूब बुझैत छथिन । मुदा ओ कऽ की सकैत छथि...से तँ अपन-अपन दुर्भाग्य...एहि मे हमर कोन दोष...हुनका तँ अपन दुर्भाग्य पर कानक चाही । हमरा सन निरीह व्यक्ति पर रोष उतारि कऽ की भेटैत छनि ?

—साड़ी चाही, कपड़ा चाही, गहना चाही एहि 'चाही'क कतहु अन्त नहि छैक । घरमे एकोटा नीक कुरसी नहि, रेडियो बिना घर सुन्न लगैत अछि—दुपहरक समय काटब कठिन भऽ जाइत अछि—

सुकान्त पत्नीक एक-एक फरमाइस पर विचार करब शुरू कयलनि । एहि दस वर्षक वैवाहिक जीवन मे एकर बड़ पैघ सूची भऽ गेल छलनि हुनका लग । दूपहर कऽ ओ आफिस मे रहैत छथि, मुन्ना स्कूल चल जाइत अछि, नन्हें बेसीकाल सूति

रहैत अछि आ नौकरो केँ तँ यैह बूलऽ जयवाक समय भेटैत छैक । से सावित्री केँ भरि दुपहर मन औनाइत रहैत छनि... एसकर मन मारने बसल रहब कोना नीक लगितनि ?

सुकान्त सोचलनि जे प्रायः एही सभ कारणेँ सावित्रीक स्वभाव एहि तरहक भेल जाइत छनि ।

से सुकान्त स्थिर कयलनि जे तत्काल कहुना एकटा रेडियो कीनि देब वेजाय नहि होयत । सन्ध्याकाल आफिस सँ अयला पर जगन ओ चाह पीबऽ बैसताह आ कोनो मधुर भास केँ सुनि विहुँसैत पत्नी जखन चाहक प्याला हाथ कऽ देथिन तँ ओकर स्वाद निश्चय भोरक स्वाद सँ बदलल रहतैक...

तखने सुकान्त केँ मुन्नाक स्मरण भऽ अयलनि । ओही एकटा साइकिल लेल जिद्द कयने छल आ सुकान्त गछियो लेने छलथिन । आव सुकान्त केँ अपन बात राखक छलनि ।

‘एके बेर कतहु मैं बहुत रासेक रुपया आवि जैतनि’..... सुकान्त सोचऽ लगलाह । हठान् सिक्कमक लाटरीक ‘ड्राइंग डेट’ केँ मन पाड़ऽ लगलाह । एक लाखक पहिल इनाम छैक । देखी जे ककरा भेटैत छैक । जँ भेटि जैतनि तँ सभटा सावित्रीक आगू मे पटकि दितथि—हे लिय ! जे किनवाक हो कीनि लिय.....

तखने मुन्ना आवि कऽ मन पाड़ि देलकनि—‘आइ हमर कोर्सक किताब सभ लेने आयब ।’

ता दोसर दिस सँ नन्हें आवि अपन अस्फुट स्वरमे बाजल—
‘बजार सँ चीजसभ औतैक—रुपैया दियहु ।’

सुकान्त केँ जेना आकस्मिक धक्का लागल हो—एते जल्दी सभ रुपैया खतम भऽ गेलैक । हे भगवन् ! किछु बुझवा मे नहि अबैत अछि जे की करी...

सुकान्त अपन स्थिति पर आक्रोश प्रकट करिते छलाह कि एक विचित्र घटना भऽ गेल । सुकान्त, सावित्रीक ई रूप नहि देखने छलथिन...तँ कि ई बताहि भऽ गेलीह...। एहि तरहें कानब, माथ-कपार पीटब, प्रलाप करब, देखि सुकान्त स्तब्ध छलाह । एना किएक ? भयभीत सुकान्त पत्नी केँ सम्हारवा मे लागल रहलाह ।

सुकान्त पत्नी पर अविश्वास कयने छलथिन—सभ टाका ग्यतम नहि भऽ गेलैक तँ कि क्यो बाकस मे बन्द कऽ रखलकैक ...।

आ सावित्री अपन अकाण्ड ताण्डव सँ सभ केँ विस्मित-भयभीत कऽ देलथिन ।

सावित्री बेहोस छलीह । सुकान्त माथ पर हाथ धयने चिन्तामग्न छलाह । नन्हें ओ मुन्ना लगक कोटली मे दुवकल छल । नोकर सहटि कऽ बाहर चल गेल छल । सौंसे डेरा मे एक विचित्र, मनहूस उदासी पसरि गेल छल ।

सुकान्त चिन्तित भाव सँ बैसल छलाह । क्षणमे एतेक पैघ कांड भऽ जयतँक तकल कनियो आशंका नहि छलनि । उद्वेग मे टहलऽ लगलाह । दोसर कोटली मे बैसल नन्हें पर नजरि गेलनि । ओकर गाल परक नोरक टघार देखि ओ विह्वल भऽ उठलाह । तड़पि कऽ कोर मे उठा लेलथिन, गाल पोछि देलथिन आ करेज सँ सटा लेलथिन ।

सुकान्त केँ आफिस जयवाक छलनि । चल गेलाह ।

संध्याकाल जखन अयलाह तँ डेरामे तखनो मृत्युक स्तब्धता व्याप्त चल ।

राति मे जखन सूतऽ लगलाह तँ नन्हें केँ शोर कयलथिन ।

नन्हें डेराइत माय सँ पुछलक—हम बाबूजी लग सूतब ।
माय दवारि देलथिन—नहि एतऽ सूत ।

परन्तु नन्हें विद्रोही जकाँ बाजल—‘नहि, हम बाबूजिये लग सूतब’ आ ओ दोसर कोठली दिस चलल ।

सावित्री केँ बर्दास्त नहि भेलनि । कसि कऽ एक चाट लगवैत बजलीह—‘जो, जहाँ जयवाक होउ । फेर कहियो हमरा लग अयलह तँ टाङ तोड़ि देब ।’

नन्हें ने कानल ने किछु बजबे कयल । चुपचाप आबि कऽ पिताक छाती मे घुसिया रहल ।

थोड़ेककालक बाद सुकान्त देखलनि जे नन्हें अपन छोट-छोट सुकोमल आङुर सँ हुनकर आँखि केँ पोछि रहल अछि ।
सुकान्त दुलार सँ ओकर हाथ मे चुम्मा लऽ लेलथिन ।

‘बाबूजी । अहाँ कनैत छी ?’—नन्हें पुछलक ।

‘नहि तँ !’—सुकान्त उत्तर देलथिन ।

नन्हें बाजल—‘अहाँ केँ माँ मारने छलि ? ओ अहाँ सँ हरदम भगड़ा करैत अछि ।’

सुकान्त एहि प्रश्न की उत्तर दितथिन ?

नन्हें सँ नहि रहल गेलैक । फेर बाजल—बाबूजी । हम दूनु गोटा कतहु भागि चलू । माँ केँ एसकरे छोड़ि दियऽ तखन बुझतीह ।

सुकान्त नन्हेंक एहि प्रतिक्रिया केँ नीक जकाँ बूझि रहल छलाह । दुलार सँ कहलथिन 'आब सूतऽ । बड़ राति भऽ गेलैक ।'

परन्तु सुकान्त स्वयं नहि सूति सकलाह । दिनुक बीतल घटना एक-एक कऽ ध्यान मे आबऽ लगलनि ...

सुकान्त केँ मन पड़लनि भोरक चाह...सावित्रीक क्रोधपूर्ण चेहरा...जारनि बीछऽवाली ओ स्त्री...पीयर साड़ी, हँसैत ओकर मुँह आ ओकर जिद्दी लट...आ फेर सावित्रीक रौद्र रूप ।

सुकान्तक मन विरक्त भऽ उठलनि । दिन-रातिक गृह-कलह .. नरकतुल्य अछि ईहो जीवन...आखिर ककरा लेल जिवैत छी ?...एहि सँ जतेक जल्दी मुक्ति भेटय ततेक नीक...

ता नन्हें अपन दूनू टाङ उठा कऽ सुकान्तक देह पर राखि देलक ।

बहुत राति धरि सुकान्त एहि भाव तन्द्रा मे डूबल रहलाह । निन्न आविये रहल छलनि कि हुनकर शरीर परिचित नारी शरीरक स्पर्शक अनुभव कयलकनि— रोम रोम कंटकित भऽ उठलनि तथा दू हृदयक धड़कन ओहि नीरवता मे स्पष्ट भऽ उठल ।

सुकान्तक तन्द्रा टूटि चुकल छल, परन्तु मन ओहिना दूर-दूर धरि भसिया रहल छल

रहि रहि कऽ सिसकीक स्वर कान केँ छूवि रहल छल...

सुकान्त केँ इच्छा भेलनि जे कतहु आन ठाम चल जाथि । कम सँ कम एग्यन कतहु कात जा कऽ सूति रहथि । ओ उठि जयबा लेल उद्यत भेलाह ।

ता दू बाँहिक बन्धन हुनका जोर सँ जकड़ि लेलकनि ।



स्वप्न-भङ्ग

श्री ललित

डाक्टर अधिकलाल वेंतक मोढ़ा खीचि खाट लग बैसि रहलाह जाहि पर जगेस्सर बेहोश पड़ल रहय ।

बड़ थाकि गेल रहथि । गोली बहार करवा मे बड़ श्रम भेल रहनि ।

रोगीक हालति अधलाहे रहैक । जाँघक घाव ओकर सड़ि गेल रहैक । छौ दिन विलम्ब भेलैक गोली बहार करवा मे । जहर सौंसे देह मे पसरि गेल रहैक । साँस ओकर भारी चलैक । दवाइक निसाँ मे रहलो पर घोर यन्त्रणा सँ रहि-रहि कुहरय । बचवाक आस कम्मे रहैक ।

दीर्घ श्वाश लऽ उठलाह डाक्टर आ खिड़की लग आवि ठाढ़ भेलाह । बाहर आसिनक मेघान्छन्न अन्हरिया रहय । दूर कोनो दिग्घी मे गोड़ल पटुआक सड़ल-गन्ध लेने पुरिवाक एक लहरि आयल । डाक्टर नहुयेँ खिड़कीक पट्टा ओंगठा देलनि ।

फेर मोढ़ा पर आवि बैसि रहलाह । जगेस्सरक वेदना-
विकृत मुँह पर निसाँक निन्न रहैक । जेना कलेशक आवेग मे
मोन कृत्रिम निन्नक तारतम्य तोड़वाक प्रयास करैत हो ।

वेदना मनुस्वक मनेटा नहि, ओकर आकृतियो केँ धो-
पखारि सहज कऽ दैत छैक । आँखि जगेस्सरक मुनल रहैक
जाहि सँ ओकर-क्रूरताक कोनोटा आभास नहि रहैक । कारी
सघन-मोँछ, तिलकल केश, बढ़ल दाढ़ी, आ सोभ मिलल भौह ।
एहि कुख्यात डकैतक मुँह अन्य साधारण रोगी जकाँ रहैक जे
कोनो सर्जिकल-वार्ड मे भेटि जायत ।

जकरा नामे मोरङ्ग-मोगलानक सिमान पर खढ़ जरैत रहय
से जाँघक सड़ैत घाव सँ पीड़ित असहाय भेल एकटा जौड़गवट्टा
पर डा० अधिक लालक डिसपेन्सरी मे पड़ल रहय । छौ राति
पहिने एक ठाम डकैती करैत काल जाँघ मे गोली लगलैक ।
काश-पटेर आ भौआक सघन जंगल धयने तीस मील चलि ओ
असोथकित भऽ आइ डाक्टर अधिक लालक 'अङ्गरेजी दवा-
खाना' मे पहुँचल रहय ।

डा० अधिक लालक ई डिसपेन्सरी मोरङ्ग-सीमान पर अव-
स्थित रहनि ।

कोशिकन्दाक ओ वन्य-प्रान्त डकैतक स्वर्ग रहय । कोशीक
छाड़नि सभ सँ भरल बालुकामय बंध्या धरतीक विराट्-आँचर
जतऽ पशुपालन जीविकाक मुख्य-साधन रहय ।

एहन दुर्गम-स्थान मे डिसपेन्सरी खोलि कैक खेपी ओहि
इलाकाक घायल डकैत सभक इलाज कऽ चुकल रहथि । ओकरा

नकारि देवाक ने साहस होइनि ने आवश्यकता ब्रूमथि । पीड़ित मानवताक सेवाक सङ्ग यथेष्ट धन प्राप्त होइनि । मुदा अपन सिद्धान्त रहनि । प्रथम जे फीसक स्थान पर डकैतीक माल नहि लेब । दोसर जे डिसपेन्सरी मे राखि इलाज नहि करब ।

मुदा आइ संध्याकाल जखन जाँघ मे लागल गोलीक सङ्गल घाव सँ ज्वराक्रान्त जगेस्सरक पीत भयार्त्त मुँह हिनक खिड़की सँ हुलकल तँ ओकरा हठान् दुतकारि देवाक इच्छा नहि भेलनि । अपन दल सँ फुटल एकाकी एहि डकैतक मनोयोग-पूर्वक चिकित्सा कयलनि । अपने घरमे एकटा जौड़खट्टा पर ओकरा शरण देलनि ।

एहि सँ पूर्वो ओकर इलाज दुइ खेपी कऽ चुकल रहथि एक बेर जखन पाँखुर पर गड़ाँसक छव बजरल रहैक । मुदा दुनू खेपी ओकर-इलाज मे जगेस्सरक उदीयमान चेला वीलट रहैक संगे । हिनका मात्र मलहम-पट्टी, दवाइ-सुइक प्रयोजन रहनि । ओ शरणागत सभ रहय लालचन्द सोनराक घरमे ।

मुदा एहि बेरक स्थिति भिन्न रहैक । एकसरे रहय जगेस्सर । बिलटा ओतहि धरा गेल छल । आर सभ गरौह छिट्ट-फुट्ट छल । जखन संध्याकाल जगेस्सर आबि हिनक दवाखना मे हठान् टेबुल पर माथ दऽ पड़ि रहल तँ ओकर इलाज करवाक अतिरिक्त हिनका लग दोसर कोन उपाय रहनि ?

जगेस्सरक साँस मे घरघरी अयलैक । ओह ! एकर जीवाक आशा कम । डाक्टर सोचलनि । मुइलाक बाद लाशक निस्तारक समन्या हठान् चितित कऽ देलकनि । आइ भोर धरि मरि जाय तँ फेर काल्हि-राति एकर लाश बोरा मे कसि

कोनो प्रकारे नदीमे भसियौनाइ आवश्यक ! मुदा एखन तँ ई चिन्ता व्यर्थ ; एखन तँ एकर उपचारक समस्या ।

उठि कऽ सिरिज मे कोरामिन भरलनि । फेर ओकर बाँहि मे खोंसि दवाइ नहुँए-नहुँए प्रवेश करौलनि ।

ओकर सांसक गति सहज भेलैक । नाड़ी ओकर देखलनि डाक्टर । छिन्न सूत जकाँ चलैत नाड़ी आव पुष्ट भेल जाइत छल ।

जगेस्सर पानि मडलक । टिनही मऽग मे पानि भरि ओकरा कण्ठक नीचा कयलनि ।

जगेस्सर आँखि फोललक । डूबल भसल आँखि । जेना अपन स्थितिक स्मरण करैत हो । फेर चौकि कऽ जगेस्सर डाँड़ टोलक ।

क्रुद्ध स्वरेँ बाजल—माल कतऽ टपा देलेँ ? निकाल तुरत, ने तँ दू खण्ड कऽ काटि देबौक ।

डाक्टर विहुँसलाह । ओकर क्रोधक कोनो प्रभाव नहि भेलनि—सीरम तर राखल छौक ।

जगेस्सर कष्ट सँ हाथ उठा सीरम तर सँ एकटा बड़का गजिया बहार कयलक । स्वर्णाभूषण आ नोट सँ वेढोल भेल गजिया केँ टोइत टोइत शान्त भेल !

मुँहक सभटा क्रूरता समाप्त भऽ गेलैक । डाक्टर दिस ताकि हँसऽ लागल । बाजल—डाक्टर तों सोचैत होयबेँ जे ई आव मरिये जायत...। तखन लूटि कऽ सभटा माल पचा जायब । आ कि ने ।

डाक्टरक मुँह सदति भावहीन रहनि । जेना काठक बनल नाक-कान आँखि-भौंह हौ । बजलाह—जगेस्सर, तोँ जँ एतेक आराम सँ मरि जयबेँ तँ भगवान पर सँ लोककेँ एकदम्मे विश्वास हटि जयतैक । तोरा एखन बड़ बाँकी छौक ।

क्रोधक स्थान पर विनोदक भाव रहैक जगेस्सरक मुँह पर । बाजल—डाक्टर, तोरा मे नीक डकैतक सभटा गुण छौक । हमरा बरोबरि भेल अछि जे तों डर सँ हमरा लोकनिक इलाज नहि करैत छेँ । तोरा कनेको डर नहि होइत छौक ।

जगेस्सर आँखि मुनि लेलक । वेदनाक फेर एकटा लहरि साँसे देहकेँ मरोड़ि देलकै । दाँत पर दाँत चढ़ा कुहरब रोकने रह्य । होश मे ओकरा मुँह सँ कुहरब बहार भऽ जाइक से ओकरा सह्य नहि रहैक ।

दर्दक वेग कमलैक तँ बाजल—डाक्टर ! तोरा जहरमे कोनो सामर्थ नहि छौक । साँझ सँ कतेक जहर तोँ देलेँ मुदा हम नहि मुइलियौक । कोनो असली आ तेज जहर दे । बड़ तकलीफ अछि ।

—जहर सँ तोँ कोना मरबेँ । तोँ तँ मरबेँ अमृत सँ । मुदा अमृत हमरा लग कतऽ !

फेर डाक्टर उठलाह । आलमारी सँ एकटा ब्रांडी बोतल बहार कऽ ओकर मुँह सँ लगा देलथिन । आँखि मुनने आधा-शीशी गट्ट-गट्ट कऽ कोनो दवाइक भ्रम मे जगेस्सर पीबि गेल ।

बड़ी काल धरि कुस्वाद सँ लड़ैत रहल । वेदना-विलह ओकर मुँह सहजता मे शान्त भऽ गेलैक ।

आँखि खोललक—डाक्टर, दारू हम नहि पीबै छी, तखन किए पिया देले ? मरऽ काल सभटा भोग पुराइये देले ।

जगेस्सरक आँखि पीरी छोड़ि लाली धयलक । ब्रांडीक निसाँ मोन पर असर करऽ लगलैक । मुँह पर अवोध शिशुक निष्कपट भाव आवि गेलैक जेना कोनो महा-सुखद स्वप्न देखैत हो ।

बाजल—डाक्टर तोरा देखि हमरा माय मोन पड़ि जाइये । तोरा लग बैसल तेहने लगैये, जेना माय लग बैसलि लगैत रहय ! ई दारू हम बीस-बरखक वाद पीलहुँ अछि । केहन-केहन सपना मोनमे नाचऽ लगैये ।

बीस बरख डाक्टर !

स्वप्न-लोक मे प्रफुल्ल-भावेँ घुमैत रहय जगेस्सर । बाजल—डाक्टर, लोक जंगलो मे मने-मने नीक सपना देखैत रहैये । बड़ नीक । अपन मोन माफिक । अच्छा डाक्टर, लोकक नीक सपना जखन टूटि जाइत छैक तँ केहन लगै छै ?

—बड़ खराब । जेना शीशाक खूब रंग-विरंगी घर क्यो हाथ सँ खसा तोड़ि दैक ।

एक क्षण चुप रहल जगेस्सर । जेना ई उपमा खूचिगर वरु नहि लागल होइक । कने सोचि बाजल—जेना कमलक फूल सँ भरल छोट पोखरि केँ कोनो पाड़ा छान्छड़ि काटि फूल-थाल-कादो एक कऽ देने हो आ कि क्यो बड़ ऊँच सँ भराक दऽ एके बेर खसैत हो ।

डाक्टर दिस तकलक जगेस्सर ।

—हँ तेहने सन लगै छै ।

—आ ओहि पाड़ा पर आ कि शीशाक घर तोड़निहार पर कतेक तामस उठैत छैक ?

बड़ तामस उठैत छैक । होइत छैक, कण्ठ मोकि दिऐक ।

डाक्टरक गप्प पर जगेस्सरक आँखि उल्लासेँ चमिक उठलैक । प्रफुल्लित भऽ बाजल—ठीक डाक्टर, एकदम ठीक । होइ छैक ओकर कण्ठ मोकि दिऐक । बेस, डाक्टर, तोहर स्वप्न जँ क्यो तोड़ि दौक तँ तोहूँ ओकर-कण्ठ मोकि देबही ?

डाक्टर अधिक लाल चुप्प रहलाह ।

हुनका दिस अविश्वासेँ ताकि जगेस्सर बाजल—नै तोरा बुते कण्ठ मोकल नै पार लगतौक । असल मे डाक्टर, तों सपने ने देखि सकै छेँ । तों जागल मे कोन गप्प, निन्नो मे ने विसुनाइत होयबेँ । तोरा सन काठक मुँहवला लोक सपना नै देखैत अछि । जे-से हमरा संतोखक लेल तों कण्ठ मोकवाक कथा बजलेँ ।

जे-से !

तँ सुन डाक्टर, मोन दऽ सुन । आइ सँ बीस बरख पहिने हमहूँ कण्ठ मोकि देने रहिएक अपना घरवालीक ।

हँ घरेवाली कहक चाही । ओना ओ हमर भाउजि रहय । मुदा जखन हमर भाय एकटा हँसेरी मे मारल गेल तँ ओकरा सँ हमर चुमाओन भेल । ओहन काजुल लोक हमर माय केँ बड़ पसिन्न रहैक । हऽर चलौनाइ छोड़ि ओ घरक सभ काज देखैक । हमरा सँ पाँच बरखक जेठ । मुदा लागैक नै । देहक माटि बड़ सक्रत । गोरि-नारि । नाम-चाकर । से, ओकर कण्ठ हम मोकि देलिऐक !

किण्क मोकिलिएक तकर पता आइ धरि नै लागल । ठीके, बड़ छोट बात पर ।

जगेसरक स्वर भरि गेलैक । जेना कोनो दूर अन्तराल सँ प्रतिबन्धन होइत बोल लगैक ।

बाजल—पटुआक गाड़ी लादि हम फारबिसगंज गेल रही । पटुआ बेचि सांभवन पहिल दिन हम दारू पीने रही । थोड़वे । खयना सङ्ग । ओ कलकतिया रहय । छुट्टी गाम मे काटऽ आयल छल । आ ओकरे सङ्गे फारबिसगंज मेला घूमल रही । दाम्क निमां ; सौंसे लोकक भीड़ । नीक-नीक नूआ-आड़ी पहिरने सुन्नर-सुन्नर लोकसभ ।

तकरा बाद नौटंकी देखलहुँ । ओह, नगाड़ाक एखनो आवाज ओहिना कानमे अबैये । तड़ड़-तड़ड़ धिन । तड़ड़-धिन !

ओहि मे मिस बेला कुमारीक डांस । डाक्टर, ओ छौड़ी नचै ? धिरनी जकां नचै । घघरा फूलि कऽ कमलक फूल जकां फुला जाइक । तेहने इसारा-बतान ।

ताही जोसपर अपन घरवाली लेल एकटा खूब नीक रेशमी ब्लाउज किनलहुँ ।

गाम लौटती काल राति मे टहाटही इजोरिया रहैक । बड़द हँकैत काल ओ ब्लाउजक पोटरी जांघतर दबने रही । मने-मन सोची, आइ अपनो घरवाली केँ ओहिना मिस बेला कुमारी जकां ई लाल रेशमी ब्लाउज पहिरायब ।

आ टहाटही इजोरिया, बड़दक गराक घंटी । बड़ मोन खुशी रहय । मोन नै अछि, मुदा लागल जेना रेशमी समुद्र मे भासल जा रहल छी ।

आ ओही स्वप्न मे जखन घर पहुचि ओकरा जगौलियेक तँ
डाक्टर ! ओ गारिए मुद्दे उठल ।

बडु गारि देलक जे हम दारू पीबि कऽ मेला मे सिरकी-
पट्टी घुमैत रही । इत्यादि ।

तैंयो हम ओकरा हाथ मे रेशमी ब्लाउज देलियेक आ कह-
लियेक पहिरि ले एकरा ।

आ ओ की कयलक डाक्टर ? ओ ब्लाउज , जकरा तीन
कोस सँ हम अपन सपना मे लपेटि कोरा मे अनने रही अपन
बेला कुमारी लेल, तकरा जुमा कऽ ऐंठ कठार पर फेकि देलक ।

हमरा भेल, जेना चन्द्रमा पर सँ क्यो धकेलि देने हो । बडु
भीतरी मोन केँ छन्न दऽ क्यो लुत्ती धिपा दागि देने हो ।

ओकर कण्ठ दुनू हाथेँ दवा हम कहलिये—किएक चिकरै
छेँ एना तों ? कण्ठ मोकि देबौक । आ ओकर कण्ठ मोकि
देलियेक !

जखन ओ हमरा देहपर भहरा खसलि तखन होस भेल !

बडु लाज भेल । लोक ओ ऐंठ कठार पर फेकल ब्लाउज
देखि की कहत ? कनेक हँमत हमरा पर !

हम राता-राती भागि गेलहुँ । ता ई नै बुझलिये जे ओ
मरि जयतै । खाली ओ फेकलहा ब्लाउजक लाजेँ घर सँ
पड़यलहुँ ।

तेसर दिन पता लागल जे ओ मरि गेलैक ! तहिया सँ
ओही ओभरायल सपना मे बौआइत छी !

दीर्घ साँस छोड़लनि डाक्टर । एहि क्रूर कर्मा दुर्दान्त-
दस्यु पर ममता भेलनि । सोचलनि—क्यो एकर स्वप्न जान-
अनजान तोड़ि देलकै आ फेर दोसर स्वप्न सृजन सँ असक ई
टूटल स्वप्नक भार लेने सभक सपना तोड़ैत चलैत अछि । सभ
सँ बदले लैत अछि ।

वाजल—हँ । ठीके जागो ! सपना टूटलाक बाद लोक
लोक नहि रहि जाइत अछि । हम सभ, जंगलो मे सपने मे
जिवैत छी ।

जगेसर आंखि मुनने रह्य । ओकर हाथ लूटिक माल सँ
भरल वेडील गजिया पर निश्चेष्ट पड़ल रहैक ।

एकटा चिनमा खयलिए रौ भैया

प्रो० मायानन्द मिश्र, एम० ए०

एन्टी करप्सनक जुनियर इन्सपेक्टर मिस्टर सिन्हा जखन सदर थाना सँ पुनः सदर कोर्ट दिस बिदा भेलाह तँ मुँह लटकि गेल छलनि, डेगक उत्साह पड़ा गेल छलनि आ मोन वितृष्णा सँ भरि उठल छलनि ।

फेर मनसूबा पर अम्सी मोन पानि पड़ि गेलनि । आखिर एकोटा आसामी नहि पकड़ि सकलाह । एहि सँ पहिनो एक बेर चान्स भेटल छलनि, मुदा ओहू ट्रिप मे ककरो नहि पकड़ि सकल छलाह ।

विश्वास होयबा मे एकोरत्ती भाङ्ग नहि रहलनि जे एहू बेर प्रमोशन नहि होयत । दू टा चान्स आ एकोटा असामी नहि ! कोन मुँह लऽ कऽ हेड आफिस जयताह ? कोन मुँहेँ मिस्टर बर्मा केँ तरक्री दऽ कहि सकथिन ? कोना अपन पेन्केल दऽ...आखिर कोना ? कोन एफीसियेन्सी पर ?

आगू किट्टु नहि सोचि सकलाह । मोन माहुर भऽ उठलनि ।
डेग आरो भरिया गेलनि ।

मिगरेट पीयव विसरि गेलाह, अपन पे-स्केलक गप्प विसरि
गेलाह, दुखिताहि पन्नीक मुँह विसरि गेलाह, आधा दर्जन
कुमारि बेटी सभ केँ विसरि गेलाह, मात्र मोन पड़ि अयलनि
मिस्टर सहायक भाग्य आ डवल प्रमोशनक गप्प ।

—मिस्टर सहाय एके साल धरि जुनियर रहलाह, एक टा
चान्स भेटलनि, ओही मे एक सडे दू टा असामी पकड़लनि,
हेड आफिस मे तहलका मचि गेल आ मिस्टर वर्मा मिस्टर
सहाय केँ डवल प्रमोशन दऽ देलथिन । टी-पार्टीक दिन बहुतो
जुनियर सभ मिस्टर सहायक भाग्यक प्रशंसा कयने छल ।

आ ताही दिन सँ मिस्टर सिन्हा एकटा चान्स लेल लाला-
यित छलाह ।

ओही दिन आयल । पेपर मे दू दिन धरि बहराईत रहलैक
जे रंगभूनि जिला मे घुसखोरी आ भ्रष्टाचार अपन सीमापर
पहुचि गेल अछि, सम्पादकक नाम पत्र सेहो छपलैक, एम० एल०
ए० क नाम मिस्टर सिन्हा विसरि रहल छलाह । मुदा विभा-
गीय मंत्री श्रीपति नाथक आफिस मे अनायासे आगमन
आ तीख फटकार ओहिना मोन छलनि । मंत्री महोदय वाजल
छलाह, 'मेरा ही क्षेत्र इतना बदनाम हो और आप लोग बैठे-
बैठे—कम से कम अगले एलक्शन तक तो..... ।

मिस्टर वर्मा आतंकित भऽ उठल छलाह । ओही दिन
डिपार्टमेंट मे मिटिंग भेल छल आ मिस्टर वर्मा मिस्टर सिन्हा

केँ पुनः दोसर चान्स देलथिन । अवैत काल मिस्टर वर्मा कहनो रहथिन—‘जाइये, इस बार एक भी आसामी जरूर पकड़िये, मैं आपके लिए डबल प्रमोशन के कागजात ठीक रखता हूँ, लेकिन सावधान, सोच समझकर, आजकल मंत्रियों के सगे-सम्बन्धी अपने-अपने धन्ये में लगे हुए हैं...जरा समझ-बूझकर...।’

आ यैह ‘समझ-बूझ’ मिस्टर सिन्हा केँ काल भऽ गेल छलनि । यैह एक टा शब्द सभटा बाधा ठाढ़ कऽ रहलनि अछि । नहि तँ असामी तँ तेहन-तेहन पकड़लनि जे...।

रंगभूमि जिलाक हेडक्वार्टर पहुँचऽ सँ पहिनिहि बाटे में एकटा ट्रक पकड़लनि, गाँजा छलैक । बड़ मनसुवायल छलाह । हर्प सँ दौड़ि गेल छलाह ट्रक लग । मुदा ओकर ड्राइवर जखन एकांत मे लऽ जाकऽ बगलबला सीट पर बैसल व्यक्ति दऽ कान मे कहने छलनि जे फल्लौ ‘मंत्रीजी के अमुक हैं’ तो चिहँकि उठल छलाह । मोन पड़ि आयल रहनि मिस्टर वर्माक शब्द ‘समझ-बूझकर’ । जाहि मंत्रीक नाम ओ ड्राइवर कहने छलनि से अपने विभागीय मंत्री छलथिन । मसोसि कऽ रहि गेल छलाह मिस्टर सिन्हा । की कऽ सकैत छलथिन ? आखिर मंत्री महोदयक भातिजे केँ कोना कऽ असामी बनवितथि ? आ सेहो अपने विभागीय मंत्री ! मिस्टर वर्माक अपेक्षित ! आ तखन प्रमोशन की जे डिसमिसे भऽ जयबाक भय ।

विवश भऽ मिस्टर सिन्हे सिकरेट पियौने रहथिन । आ मन्हुआ कऽ विदा भेल छलाह जिलाक हेडक्वार्टर दिस ।

जोख एकटा आरो भेटलनि, नहि भेटलनि से गप्प नहि, मुदा भाग्ये तेहन फूटल छलनि जे सभ ठाम मिस्टर बर्माक शब्द 'समझ-बूझकर' बाधा दैत गेलनि ।

मोन पड़लनि —

हार्ड मैनचल लेबर स्कीमक सिलसिला मे सदर सबडिवी-जनक एस० डी० ओ० एकटा ठीकेदार सँ तीन हजार सलामी लैत रहथिन जाहि मे ठीकेदार केँ पाँच हजारक लाभ होइत रहैक । मिस्टर सिन्हा सभ दिन तेज रहलाह, पढ़वो-लिखवा मे आ अपन काजो-उद्यम मे । संस्कारक कारणेँ इमानदारो कम नहि । मुदा भाग्य-रेखा सभ सँ कमजोर । हिनक दुर्भाग्य गइत जे ओहि एस० डी० ओ०क साक्षाते मामा लोक सभाक प्रभावशाली सदस्य । एहि बेर डिप्टीयो मिनिस्टर होयवाक संयोग छलनि । ऐन मौका पर एस० डी० ओ० सँ परिचय भेलनि, ई गप्प खुजल, मिस्टर सिन्हा फेरो उदास भऽ गेलाह । असामी हिनका हाथ आयियो कऽ नहि अवैत छनि । बेर-बेर मिस्टर बर्माक शब्द 'समझ-बूझ कर' मोन पड़ि जाइत छनि ।

आ तखने मोन पड़ि जाइत छनि सतति दुखिताहि पत्नी आ आधा वर्जन कुमारि बेटी सभक मुँह ।

आ बेर-बेर मिस्टर सिन्हा अपन आदर्श बिसरि जाइत छथि, अपन डवल प्रमोशनक गप्प बिसरि जाइत छथि ।

सदर कोर्ट दिस चलैत-चलैत मिस्टर सिन्हा चौकि उठ-लाह । चौबटिया आवि गेल छँक, कोनो दोकान पर पान खयवाक तीव्र इच्छा भऽ रहल छलनि ।

दोकान पर गेलाह । पान खयलनि आ अयना मे मुँह देखलनि । गोर, गोल मुँह, सफाचट मोछ-दाढ़ी, करिया फ्रेमक चश्मा आ उदास आँखि ।

जेवी सँ कैचा दैत काल आङ्गुर मे दरोगा साहेबक देल कैसटन सिगरेटक डिव्वा हाथ मे ठेकलनि । लगलनि जेना जेवी मे बाघ होइनि, गेहुमन साँपक पोआ होइन ।

दरोगा साहेब सँ अपन दोस्तीक गप्प बड़ अतिखाइन बुझना गेलनि ।

मिस्टर सिन्हा कोर्ट दिस बिदा भेलाह । अंतिम शिकार हाथ मे आवि कऽ चल गेल छलनि । निश्चय भऽ गेलनि जे आव प्रमोशन नहि भऽ सकैत अछि ।

एकटा डकैती केस मे दरोगा साहेब केँ पकड़वो कयलनि, एकदम रंगले हाथ, तँ ओ मित्रो छलथिन । जखन गाँजाक ट्रक केँ छोड़लनि, एस० डी० ओ० केँ छोड़ि देलथिन, तखन अपन मित्र केँ कोना पकड़ितथि ?

एक दिस स्कुलिये जीवन सँ मैत्री, दोसर दिस प्रमोशन, दुखिताहि पत्नी, आधा दर्जन कुमारि बेटी आ अंतिम चान्स ।

मिस्टर सिन्हा हताश भऽ गेल छलाह । की एहू बेर ओ खालिये राजधानी घुरताह ?

मोनमे भेलनि, एखन जँ डेग-डेग पर गली-गली मे, आफिस आफिस मे घुसखोरी आ भ्रष्टाचार नङ्गटे नचैत रहितैक तँ ओ अवश्ये एकोटा असामी केँ पकड़ि सकितथि । तखन अवश्ये हुनक प्रमोशन भऽ जैतनि । मुदा.....।

ता सदर कोर्टक नजारत लग आवि गेल छलाह मिस्टर सिन्हा । नजरि पड़लनि, एक टा चपरासी दू-तीन टा देहाती सँ किछु लऽ कऽ नुकाकऽ जेबी मे धरैत छल । भूपटि कऽ पहुँचलाह आ चट दऽ पकड़ि लेलथिन । नजारत मे ई भ्रष्टाचार !

एके क्षणमे सौसे सदर कोर्ट मे आगि जकाँ गप्प पसरि गेलैक जे एन्टीकरप्शनक इन्स्पेक्टरक द्वारा नजारतक एकटा चपरासी घूस लैत पकड़ा गेलैक ।

चपरासी बहुतो कानल-खीजल, मुदा मिस्टर सिन्हाक इमानदारी विख्यात अछि । तेँ नहि छोड़लथिन ।

मिस्टर सिन्हाक हर्षक सीमा नहि छलनि । आखिर असामी पकड़ाइये गेल । ई चान्स खाली नहि गेलनि । आव प्रमोशन होयवे करतनि ।

दरोगा साहेबक देल कैंप्लेटन सिगरेट पीवऽ लगलाह ।

बन्हकी

प्रो० धीरेन्द्र एम० ए०

मुकनिक काल्हि दुरागमन थिकै । भारी मोन सँ मुनलक गुड़की बुढ़िया । गुड़की बुढ़िया कें सभ डाइन कहैक आ' अपन-अपन नेना-भुटका कें यथासाध्य ओकरा सोभहाँ पड़वा सँ बचावै । घाटपर, बाट मे, सभ ठाम गुड़की बुढ़ियाक प्रसङ्ग फदका चलए—“...यै बहिन दाइ ! गे मइयो !...बाप रे बाप, हकलि छै हकलि !... देखै नइ छथीन, दिन-राति काँची लागल रहै छै आँखि मे !...आ हैऽ ! ...किदन किदन बड़बड़ाइतो रहैक .. छै !...हँऽ !...”—मुदा फदका अपन स्थान पर छल आ नेना भुटका अपन ढाठि पर ! अतः अपना अपना माइक लगा-ओल एक सए चौआलिस अछैतो, भूँड बान्हि कें नेना सब गुड़की बुढ़िया लग जा कए बैसिए रहए ।

आ जकर कारणों छलैक । लोक भने गुड़की बुढ़ियाक गुल्लेंती भए गेल विकृत शरीर कें देखि नियतिक मारिक अनुभव करवाक बदला मे ओकरा ‘डाइन’ कहैत रहैक, मुदा हृदयक

स्निग्धताक पारखी नेना सभ सँ गुड़की बुढ़ियाक स्नेह-स्निग्ध स्वभाव नुका नहि सकै छल । जतऽ हरखू मिसर अपन हरसा क गाछतर ककरो टपऽ नहि दै आ' कनिये मे गारि-मारि पर उतरि आवए ओतर गुड़की बुढ़ियाक आँगन महक लताम, दाड़िम आ' हरसा समस्त टोलक नेना-भुटकाक लेल—मुक्त छल । —“...हे दाइ ! अपन तँ उगलाहा लऽ गेला सखनि तँ गामे-घरक धीया-पूता ने अपन भेल ।” की करबहक खाए दहक ।” —बुढ़िया कहैक आ' इएह कारण छल जे माए-बाबक एक सए चौआलिस सभ दिन दूटए ।

आ पूछल जाए तँ लोकक इष्टि मे बुढ़ियाक इएह असाधारण उदारता सन्देहक विष-वृक्ष बनि गेल छल आओर ओकरा ‘डाइन’ कहल जाए छल । समाजक बस इएह न्याय छल । नीक लोक कतउ एतेक उदार हुअए । ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ शास्त्रक आम्र वाक्य रहओ, मुदा सब लोक कि जोगी महत्तमा छी ? से अपन सहज मातृत्वक आपूर्ति करैवाली ओइ सन्तान सँ हीन निराश्रिता-विधवा कें लोक ‘डाइन’ कहैत छलै, कारण ओ टोल भरिक नेनाक कें अपन बुझय । ई कि कनेक पैव अपराध छल !!

एतवहि नहि, बुढ़ियाक माथ मे खिस्सा-पिहानीक ततेक पैव भंडार छल जे कहल नहि जा सकैछ आ' खिस्सा-पिहानी तथा नेना-भुटका मे तँ गूड़-चुट्टीक सम्बन्ध छैक ने । से जे कनेक फफक पावय कि सुट्ट दन ओ सभ बुढ़िया कए घेरि कें बैसि रहय ।

बुढ़ियाक ओइ ठाम जाइबला नेना-भुटकाक दलमे सुकनी सभ सँ वेशी ‘रेगुलर’ छल आ' इएह कारण रहै जे गुड़की

बुढ़िया सुकनी कें कनेक वेशी मानय लागल रहै' मोने-मोन ! आर तँ नइ किछु, दुपहरिया मे बुढ़ियाक माथक ढील ताकि दै' सुकनी आ' हुक्का भरि कए आवेशसँ बुढ़िया कें पीवाक हेतु दै । सन्तान सँ हीन गुड़की बुढ़िया कें सुकनीक एहि व्यवहार मे ओतवए पैघ आनन्द भेटैक जतवा कोनो विशाल मरुभूमि मे भ्रमण कएनिहार यात्री कें शुष्क बालुक मध्य नख-लिस्तान कें देखि भेटैत अछि । स्नेह एवं सद्भावनाक भूख प्रायः मनुष्यक सभ सँ पैघ भूख थीक ने !!

गामक लोक गुड़की बुढ़िया कें कंजूस कहए आ' ओकरा लोकनिक अनुमान रहै जे बुढ़िया वेश जमा-जत्था गाड़ि रखने अछि । एहिमे सँ वेशी ओ लोक सभ छल जे चाहैत छल जे गुड़की बुढ़िया अपन घर-घरारी ओकरा नामे लिखि दै । किछु गोटेय बुढ़िया कें सेवाक प्रलोभन देलकै । एक-दू गोटे तँ किछु दिन धरि बुढ़ियाक तखमीनो कएलक; मुदा जै कि ओ सभ जमीनक मादे गप्प करए कि बुढ़िया कात भए जाए, मने कोनो वैष्णवक सोझहाँ मे केओ माँछक चर्चा चला देने हो । अतः खिसिया कए बुढ़िया कें ओ सभ 'कंजूस' कहए लागल छल ।

बुढ़िया अपन पाँच कट्टा खेत कें जन राखि नोक जकाँ आवाद करवावए । ततवे नहि, धनकटनी, रव्ही आ' भदइ सभ मे लोक सभक खेत मे जा कए बोनि करए । -“...हइ दाइ ! एक तँ खटव नइ तँ खाएव की आ' दोसर खटल देह कें की रहल जाइ छै ।”—बुढ़िया कहै' मुदा लोक सब नकिया कें बाजय—“...हँ ! लदने जाएव पीठपर ।...”

मे सुकनी गुड़की बुढ़िया केँ जान सँ बढ़ि कए प्रिय छलै । आवेश सँ ओ ओकरा 'सुकन' कहै !—“...हइ सुकन !...कनी माग बाउग कए दिहै वौआ !...”

आ' सुकनियो केँ जेना संनार मे सब सँ नीक गुड़किये बुढ़िया लागै । कतेको दिन मारि खएने हएत सुकनी एहि चलतिए । माए कहैक—“...धोंछिया ! जी गाड़ने छौ बुढ़िया ! ...माटि पढ़ि कए दऽ देलकउ धुरखुरक !...” “मुदा सुकनी छलि जे गुड़की बुढ़ियाक संग ओकरा छोड़ले ने जाइक ।—“बुढ़िया मैया”—कहै ओकरा !!

होइत-होइत गुड़की बुढ़िया आ' सुकनीक एहि समत्वक कथा बेस नोन-मरचाइ लगा कए समस्त गाम मे पसरि गेल । लोकक पक्का विश्वास छलै जे गुड़की बुढ़िया मोहन-मन्त्र सँ सुकनी केँ बशमे कऽ लेलकए । किछु तर्क कैनिहारि तँ अनुमान भिरौलक जे गुड़की बुढ़िया सुकनी केँ अपन चेली बनवए चाहैत अछि डनिपनक आ' तएँ टोलभरिक माउगक एकगोट 'डेपुटेशन' सुकनीक माइक ओहि ठाम पहुँचिल आ' विचार देलकै जे आइ दिन सँ सुकनी केँ गुड़की बुढ़िया लग नइ जाए दैक ।

आ' से ओइ दिन सँ सुकनी पर पूरा-पूरी रोक लागि गेलै । एक दिन बितल । दू दिन बितल । सुकनी बुढ़ियाक ओतए नहि गेल । बुढ़िया केँ बुझि पड़ै मने केओ ओकर प्राण सँ किछु अंश नोचि नेने हो । तेमरा दिन बुढ़िया केँ नइ रहल गेलै । कतउ सुकनी दुखित ने पड़ि गेल होइ । जा' कए देख-वाक चाही ।—बुढ़िया सोचलक आ' खुट-खुट करैत लाठी

टेकैत विदा भेल । ओ की जानए गेलैक जे गाम भरिक लोक ओकरा विरुद्ध खनखर' पानि पीवि लागल अछि !

आ' गुड़की बुढ़िया जावत धरि सुकनीक माइक घर लग पहुँचए तावत कतेको आँखि मँटकि चुकल छल, कतेको ठोर टेढ़ भए कए कुनमुनाए चुकल छल ।

बुढ़िया सुकनीक आँगन पहुँचलि । आँगन खाली देखि खसि कए सोर पाइलकै—“सुकन !...”

घरमे माइक संग केथरी सिबैत सुकनीक कानमे बुढ़ियाक चिर परिचित सम्बोधन टकराएल, मुदा मन ममोसि कें रहि गेल सुकनी आ' आन दिन जकाँ “ऊ” नहि कहि सकलै ।

बुढ़िया फेर चिकरलि आ' कोनो निस्तब्ध भाँगुर सँ अकस्मात गर्जन करैत बाघ जेना ककरोपर दृष्टि पड़ैछ तहिना... धोंछी ! निराशी !! “कहैत सुकनी क माय कूदि कए आँगन आएल आ' बुढ़ियाक भोंट पकड़ि लीड़ी-चीड़ी करए लागलि । ...एहि आकस्मिक आक्रमणक हेतु पूर्वतया असावधान बुढ़िया खसि पड़लि आ' सुकनीक माए थोड़वे काल मे लाते-मुक्के ओकरा ततेक मारलकै जे यदि बीचमे सुकनी आवि बुढ़ियाक देह पर पड़ि नहि रहैत आ' हल्ला सूनि लोक सभ नइ जमा भ' जाइत तँ बुढ़ियाक प्राणो बाँचव कठिन छलै । बेहोश होइत बुढ़िया एतवए देखलक जे सुकनी ओकरा देहपर आवि कए पड़ि रहलैक अछि आ' बेहोसो होइत—होइत एक गोट मृदु-भावनाक कोमल स्पर्श ओकरा करेज कें स्पर्श करैत टघरि गेल । बेहोशी मे निपट्र भेल ओकर आँखिक कोर सँ जे जलबिन्दु टघरल छल ताहि मे मारिक वेदना आ' सहानुभूतिक आह्लाद कतेक-कतेक मात्रा मे छल ई कहव कठिन अछि ।

कखनि लोक बुढ़िया के उठाकए आँगन दए अएलैक आ' कोना फेर उठि कए ठाढ़ भेल बुढ़िया ई सभ किछु ने बुझलकै' ओ । ने केओ ओकरा मारिक विषयमे पुछलक आ' ने ओ ओइ प्रसंग मे ककरो किछु कहलकै । हँ ! सुकनोक ऊद्वेग ओकरा नइ लागल होइ से नहि; मुदा अनकर फुलवारीक गुलाब कनचो पसन्द रहउ, ओ अहाँक तँ नहि भए सकैछ ने ! से बुढ़िया मरमोसि कए रहि गेल ।...आ' काल्हि सुकनीक 'दुरा-गमन' थिकै । सुनलक अछि बुढ़िया लोकक मुँह !! आ' गुनुर-गुनुर होइत दू-एक गप्प ओकरा अओरो सुनवा मे अएलैक ! एक तँ सुकनीक बाप ठिठरा ओहुना पेटचोनिये अछि, दोसर अइ बेर 'मियादी जर' तेना ने पकड़लकै जे तबाह भऽ गेल । नइपर मँ कतिकहरक भमारल कोनो तरहे ओ दुरागमन करवाए-वाक स्थिति मे नहि छल । मुदा जमाइक जिद सँ तँ बड़का-बड़का हारि मानैत छथि, फेर ठिठरा की छल !! तएँ दिन मानि लेलकै ।

बुढ़िया सुनने छलि जे बड़ फिरीमानी सँ दू-ग्वण्ड नूआ, भरि हाथ लट्ठी आ' आंग पर लेल एकगोट आँगीक इन्तजाम कएने रहै, मुदा सब सँ पैघ तँ एक गोठ गप्प छलै । सुकनीक नामुर सँ आएल सूति आ बरहरी के ग्वगता पर भंभारपुर मे मड़वरियाक ओतए बन्हकी लगा देने छल ठिठरा आ' तकरा पाँच बरख भऽ गेल छलै । सूदि-सूर लगा कए पच्चीन गोठ टाका होइत छलै आ कतचो प्रबन्ध कएला उत्तर दम गोठ टाका सँ बेशी नइ जुटा सकल ओ । महाजन कोनो बरफ तँ छलै नइ जे पिघलि जेतै ओकर नोर पर ! से मुँहमे धान दे छल तँ लावा भए रहल छलै । लोक जेना कि भेल करैछ,

सहायता देवा साती गुनुर गुनुर कए रहल छल । वृद्धिया सभटा सुनने छलि ।

सुकनक चेहरा वृद्धियाक समक्ष नाचि रहल छल । तीन गोठ चेहरा । एकगोट खिन्ना सुनैक लेल विह्वलित सुकनीक चेहरा, दोसर 'बाप रे बाप' वृद्धिया मरि जेतै' कहि ओकर देह पर पड़ि रहनिहारि सुकनीक चेहरा आ' तेसर आजुक काल्पनिक चेहरा जे नोर सँ तीतल हएत मने !...आ' अकस्मात वृद्धियाक कोंड़ फाटि गेलै । से बिना गहनैक जेत सुकनी आ' सामुर मे जा कए गारि-गारि महतै । ऊँहूँ ! ई कोना होमए देतै गुड़की वृद्धिया !!...आँखिक नोर पोछि वृद्धिया झलि आ' कोठिक गोरा तर सँ एक गोठ केथरी बहार कएलक आ' पन्ध्र बीस मिनटक परिश्रमक पश्चान् कर-कर करैत, मुदा नुरिया कए राखल गोर पचासेक एकटकड़ी, दुटकड़ी नोट वृद्धियाक आगाँ मे पसरल छल । गनलकें वृद्धिया; अस्मीटा रुपया छलै ! इएह छल जिनगी भरिक वृद्धियाक जना-जत्था । बड़ मांह सँ एक बेर वृद्धिया ओइ नोट सभ दिसि देखलक आ' फेर सभकें समष्टि एकटा पोटरीमे बान्हि देलकें । केथरी कें फेर देलक जेना नारिकेर बहार कए लेलाक बाद ओकर खोइया कें लोक फेकि दैत छै ।

आ' ओइ कालक गुड़की वृद्धियाक मोनक थाह पता केओ ने लगा सकैछ । एक डेग आगू दिअए आ' एक डेग पाछू ! होइत होइत अपन मानसिक रत्नाकस्सी सँ करीब दस बजे दिन मे जा' कए मुक्ति पओलक ओ ! ..नइ ! ओ जएवे करत । एकबेर जाकए कहतै जरूर । ऊँहूँ ! सुकनी फें बिना गहनाक नइ जाए देतै ओ !! ओना दोसर मोन कहै, मुदा आइयो यदि मारए लगलौ मौगिया तखनि ? रुपैयाँ छीनि लेतौ आ

सारथी करतौ । ने नाम, ने यश ! ...मुदा हम ना' यश
लेल कतौ दै' ले जाइ' छियै' । हमरा तँ ई नइ सुनल जाइय जे
सुकनी बिना गहनाक जेतै' । तएँ दै' ले जाइ छियै ई रुपया जे
बन्हकी छोड़ा अनतै' आ' एक-दूगो नवो गहना कीनि देतै ।
...मोह-पक्षक आगू तर्क-पक्षकें पराजून होमए पड़लैक ।

खुद-खुद करैत बुढ़िया फेर आंखि बाटें जा रहल छल जाहि
बाटें ओइ दिन गेल छल । आइयो ओहिना कनखी-मटकी आ'
गोर विजकानलिक संग तदका चलि रहल छल; मुदा सभटा
बुभियो कए विदेह जेकाँ निर्विकार भेलि बुढ़िया आगू बढ़ि रहल
छलि । एक आ' मात्र एक लक्ष्य ओकरा समक्ष छलै' जे सुकनीक
गहना बेगरि ओ सासुर नहि जाए देतै । ...कोनो महान भक्त
जेना भगवानक अस्तित्व ने अपन अस्तित्वक निरोद्धि कए नै छ
तहिना आइ गुड़की बुढ़िया सुकनी कं भर रहल छलि !!!

आ'—साँझ मे जखनि आगाँ आगाँ खुद-खुद करैत गुड़की-
बुढ़ियाक पाछू-पाछू गहनाक पोटरा नेने छिहरा भंभारपुर सँ
बुरल तँ धूमनक सुगन्धि जकाँ गाम भरि मे ई गप्प पसरि गेल ।
ग्यास सुकनीक माइए ई गप्प सभ कें कहि अएलैक—“बज्र
खसए हमरा पर !...लोक अनेरे बुढ़िया कें डाइन कहै छै !...”

मुदा गुड़की बुढ़िया कें लोक भवनाक एहि परिवर्तनक कोनो
परवाहि नहि छलै । ओ एहीटा लऽ कए संतुष्ट छलि जे सुकनी
बेगरि गहनाक सासुर नइ जेतै' आव आ' संगहि सुकनीक विदा
हवाक काल केओ ओकरा धार मिलेवा सँ रोकि नहि सकत ।

'गुड़ गुड़-गुड़' बुढ़ियाक हुका गुड़गुड़ा रहल छल आ'
सुकनी आइ अन्तिम बेर बुढ़िया सँ खिस्सा सुनि रहल छलि !!

समाधि वजैत अद्धि

श्री शंभुनाथ वलियासे 'मुकुल'

मुविधा-जनक आवागमनक रस्ता समाप्त भऽ गेल अद्धि । किन्तु अहाँ किछु आर आगाँ एकपेरियासँ बढ़ि जाउ । आगाँ एकटा गाछ हरियर आ पीयर पातसँ भरल-पुरल भेटि जायत । गाछक फेड़ आ धड़क विशालता देखि सहजे अनुमान भऽ जायत जे ई गाछ अजुका नहि, प्राचीन कालक थिक । ओतऽ एक दिस हरियर ओ मोलायम बानक मग्नमली गद्दी चिद्धाओल सेहो भेटत !

ओहि गद्दीपर अहाँ किछु कालक लेल बैसि जाउ । चारु दिस नजरि फेरलासँ भाँय-भाँय लागत । कत्तहु कोनो मानवक दर्शन नहि होयत । एहन दुर्गम स्थानमे अनायास क्यो आवि सकैत छैक, एकर कल्पनो अहाँ नहि कऽ सकय । बूझि पड़न दूरमे मात्र एकटा स्तूप अद्धि जकरा वेदी अथवा समाधि कहि सकैत छी । जिज्ञासा होयत—ककर समाधि थिकैक ? संगहि संग सोचऽ लागव—ई ककर स्मृतिमे एतेक दिनसँ विविध प्रका-

रक घात-प्रतिघात सहैत आइ धरि बैसल अछि ? ककर ई समाधि थिकैक ? किन्तु कहनिहार क्यो नहि भेटत । ओकर सम्बन्धमे जनतव रखनिहार लोक आइमँ कैक सय वर्ष पूर्व जीवित छलाह । समाधि पर कनहु किछु लिखलो नहि भेटत जाहि सँ जनतव संभव भऽ सकैत छल । मुदा ई सत्य अछि जे समाधि पर कहियो-कहियो दीप जरैत अछि तकर चिन्ह अहांकेँ स्पष्ट बूझि पड़ि जायत ।

ई निश्चित अछि जे ओ अज्ञात, आकर्षणहीन समाधि-स्थल अहांकेँ बड़ प्रिय लागत । मनमे होयत - जाहि व्यक्तिक ई समाधि थिकैक तकर संग अहांकेँ कोनो आत्मीयता छल । आर अहां समाधिक निकट बैसि आत्मीय सभक स्मरण करऽ लागव— जकरा अहां प्रेम करैत छलहुँ आ जे अहांकेँ प्रेम करैत छलाह । सोचवाक एहन क्रममे राति भऽ जायत, किन्तु ओहि रामसँ कात जयवाक अहां कल्पनो नहि कऽ सकव ।

दोसर दिन अहां स्वतः ओहिठाम उपस्थित भऽ जायव । एवम् प्रकारसँ नित्य ओहिठाम जयवाक अभ्यास भऽ जायत । भऽ सकैत अछि जे ओतऽ किछु नहि रह्य, किन्तु नहि रहलोमे अहांकेँ विचित्र आकर्षण बूझि पड़त ।

एकदिन गाछक पात सभसँ नुकाइत इजोरिया आविकऽ पड़त ओहि समाधि पर । सम्भव थिक जे एहन सौन्दर्यमय दृश्य देखैत-देखैत अहांकेँ नीन भऽ जाय आ अहां ओहि घासक मखमली गद्दी पर सूति जाइ । फेर अकस्मात किछु कालक बाद नीन टूटि जायत आ अहां दौड़ि जायव एकटा युवतीकेँ आकर्षक रूपमे उपस्थित देखि !

युवती एकटा घृतप्रदीप हाथमे लऽ जेना कोनो अदृश्य स्थान सँ अवतरित भऽ गेल अछि । ओ प्रदीप लेने निर्निमेष भावसँ समाधि केँ देखैत रहतीह । पुनः तृपानुर भावसँ किछु कालक बाद प्रदीप समाधि पर राखि उदास भाव सँ देखैत रहतीह । निर्वाक शान्त—जेना सुदूर गगनक देदीप्यमान नक्षत्रक दिस लोकसभ देखैत रहैत अछि ।

ई युवती के थिक ? अहाँक आश्चर्य बढ़ि जायत ओकर पहिरना देखि । कोनो राजपूत रमणी केँ यदि अहाँ देखने छी तँ ओकरा पहिरना सँ एकर पहिरना मे बहुत किछु नाम्य बुझि पड़त ।

किछु कालक बाद युवती अहाँक निकट आवि बैसि जायनि । एहन आश्चर्यजनक परिस्थिति देखि अहाँ अवाक भऽ जायव । किछु काल धरि की वाजी आ की करी ई अहाँ केँ नहि फूरत । किन्तु युवती अहाँक मनोदशा देखि स्वयं जिज्ञासा करतीह—“अहाँ नित्य एहिदाम किएक अवैत छी ?”

अज्ञात कुल-शील! युवतीक मुख सँ एहन प्रश्न सुनि किछु समय अहाँकेँ आत्मस्थ होवऽ मे लागि जायत । ओकर प्रश्नक कोनो उत्तर बिना देने अहाँ परिचय जनवाक लेल व्यग्र भऽ जायव । युवती वाजि उठतीह—“हमर परिचय जनवाक इच्छा आइ धरि क्यों नहि कयलक । अहाँ परिचय जुनि प्राप्त करू । प्रत्युत हमरा सँ एकटा विस्मा मुनि लियऽ ।” आर ओकर आग्रह केँ कोनो खाम कारण सँ अहाँ टारि नहि सकव ।

युवती कहतीह—“पृथ्वीराजक संग जयचंद केँ शत्रुता छलैक । पृथ्वीराज केँ परास्त करवाक हेतु जयचंद मुहम्मद

गोरी केँ वजौने छल । मुहम्मद गोरीक संग पृथ्वीराज केँ दू बेर युद्ध भेल छलैक । युद्धक कथा अहाँ इतिहास मे पढ़ने होयब । मुदा पृथ्वीराज केँ विजयी बनयबा मे जे व्यक्ति सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आ जोखिमबला काज कयने छलैक तकर नाम इतिहासक कोनो पृष्ठ पर आइ धरि अंकित नहि भेलैक अछि । आश्चर्यक बात नहि, एहन बहुत व्यक्ति सभक नाम इतिहास मे नहि रहैत छैक ।

प्रथम युद्ध चलि रहल छलैक । दुनू दलक सैनिक-छावनि सभ पड़ि गेल छल । दलक दल सैनिक सभ आवि आवि कऽ जमा भऽ रहल छल । मुदा वास्तविक युद्ध आरम्भ नहि भेल छलैक । कारण एक पक्ष दोसर पक्षक सैन्य-शक्तिक अन्दाज नहि कऽ सकल छल । कोन दिस सँ कोना आक्रमण कयला सँ विजय प्राप्त भऽ सकैत अछि एकर मंत्रणा दुनू शिविर मे चलि रहल छलैक । सम्पूर्ण नगर युद्धक वातावरण मे माति गेल छलैक । सभ गोटे महाराज पृथ्वीराजक विजयक कामना कऽ रहल छलाह ।

ठीक एहि समय मे भरत सिंह नगर आपन आवि गेलाह । हुनक घोड़ा एकटा खोपड़ीक दरदजा पर आवि कऽ रुकि गेल । ठक् ठक्...ठक् । दरदजाक केदार खोलि जयन्ती विस्मृत भऽ गेलीह । दुनूक आँखि मे आनन्दक रेखा स्पष्ट दृष्टिगोचर भऽ रहल छल । किछु काल दुनू स्तब्ध मौन रहि गेलाह ।

भरत सिंह आ जयन्तीक शंशय एवं किशोर जीवन संगहि संग वीतल छल—खेल आ आमोद-प्रमोद मे । केहन आनन्दमय

किन्तु भयानक ओ दिन सभ छल । बाद यौवन-काल आवि गेल । जयन्तीक पिता सोचऽ लगलाह जे आव एकरा ककरो हाथ मे दऽ देवाक चाही । अतएव ओ सुयोग्य पात्रक खोज मे भ्रमण करऽ लगलाह । ई सभ देखि जयन्तीक मुखमण्डल पर जेना मेघक दल उतरि गेल होअय । कन्या कोन बातक लेल चिंतित भऽ गेल छथि, जयन्तीक माय सभ बृभक्त छलीह । ओ जयन्तीक पिता सँ ओ सभटा बात कहि देलथिन ।

मुदा भरत सिंह धन एवं मातृ पितृहीन छलाह । एहन पात्रक हाथ मे जयन्ती सदृश कन्या सुपुर्द करव सम्भव नहि छल । तेँ जयन्तीक पिता एक दिन भरत सिंह केँ बजाय कहलनि—‘खेल धूप मे जीवनक बहुत समय समाप्त भऽ गेल भरत ! आव कोनो काज-धन्दाक दिस ध्यान देवाक चाही ।

भरत एतवे मे सभ किल्लु बृकि गेल छलाह । ओ एक दिन धनोपार्जनक हेतु अनचिन्हार पथमे निकलि गेलाह । विदाइ-वेरमे जयन्ती ई स्पष्ट कहि देने छलीह जे ओ अपन भरतक हेतु प्रतीक्षा करैत रहतीह ।

आइ एक वर्षक बाद भरत अपन नगर आयल छलाह । जयन्ती प्रसन्न मुद्रामे भरत केँ भीतर लऽ गेलीह । जयन्तीक पिता पृथ्वीराजक दूरस्थ सैन्य शिविरमे छलाह । दू मास पूर्व माँ स्वर्गवासिनी भऽ गेल छलथिन । एकान्त गृह । निस्तब्ध राति ।

आकस्मिक मिलनक विस्मय समाप्त भेलाक बाद भरत कहऽ लगलाह—“जनैत छी जयन्ती ! आव हम तेहन दरिद्र नहि छी । बहुत दिन बौआइत रहलहुँ । मुहम्मद गोरीक ओहिठाम काज भेटि गेल अछि । सेनापतिक काज । पैसा आ सम्मान...।”

ई वाक्य सुनैत घृणा सँ जयन्तीक भृकुटि सिकुड़ि गेलैक । ओ व्यंग्य करैत बजलीह—“बड़ सम्मानक काज कऽ रहल छी ! शत्रुक अधीन भृत्यक काज !!”

अहाँ जनैत नहि छी जयन्ती, एहि युद्ध मे मुहम्मद गोरीक विजय भेलाक बाद भरत एहि ठामक राजा बनताह आ रानी बनतीह जयन्ती, सुनलहुँ ? गोरोक संग सभ बात भऽ गेल अछि । तेँ सेनापतिक पहिरना त्यागि साधारण व्यक्तिक बेपमे एहि ठाम उपस्थित भेल छी—पृथ्वीराजक सैन्य-शक्ति आ प्रस्थान क निश्चित समय जनवाक हेतु । आशा अछि, अपन उज्ज्वल भविष्यक हेतु अहाँ.....।

जयन्ती सँ एहि बेर मौन नहि रहल गेलनि । ओ बाजि उठलीह “अँ भयानक गलती कऽ रहल छी भरत ! शत्रुक प्रपंच मे पड़ि अहाँ देशक सर्वनाश केँ बजा रहल छी । विजयी भेलाक बाद गोरी स्वयं एहि ठामक राजा बनत । ओ अहाँ केँ पद-दलित कऽ देत । अहाँ दुर्वृद्धि त्यागि दियऽ ।”

“नहि, ई कदापि नहि होयत । पैसा पर्याप्त नहि भेला सँ हमर अभीष्ट सिद्ध नहि होयत जयन्ती ! बहुत प्रकारक समाचार सुनि चुकल छी । एहि ठाम सँ आपस गेलाक बाद एहि बेर.....।”

भरत केँ कोनो प्रकारेँ बुझयवा मे जयन्ती सफल नहि भऽ सकलीह । आन्तरिक वेदना सँ हुनक चान सन मुखमण्डल मलिन भऽ गेलनि । सोचऽ लगलीह—ई की वैह भरत थिक जकरा एतेक प्रेम करैत छलहुँ । सोचवा काल मे हठान् ओकर भौह तना गेलैक ।

विभिन्न प्रकार सँ मान-खातिर करैत जयन्ती शत्रुपक्ष क बहुत बातक जनतब प्राप्त कऽ लेलनि । बादमे भरत सँ वज-लीह—“प्रियवर ! अहां किछु काल धरि आराम करू, थाकि गेल छी । आ हम तावत भोजन क व्यवस्था कऽ रहल छी । एतवा कहैत जयन्ती दोसर कोठरी चलि गेलीह ।

भरत विभिन्न प्रकार क उज्ज्वल भविष्य क कल्पना करैत ओहीठाम आराम करैत रहलाह । किछु काल धरि प्रतीक्षा कयलाक बादो तखन जयन्ती नहि उपस्थित भेलीह तँ ओ बड़ चिन्ता मे पड़ि गेलाह । सोचऽ लगलाह—जयन्ती कतऽ चलि गेलीह । एवम् प्रकारे बहुत राति बीति गेल । अपन शिविर मे आपस जायब सेहो संभव नहि छलनि । कोठली सँ बाहर आवि देखलनि । ने घोड़ा आर ने जयन्ती । भयभीत एवं आशंकित भऽ एक कोन मे नुका रहलाह ।

जयन्ती ? जयन्ती कतऽ ? जयन्ती तखन पृथ्वीराज क शिविर मे अपन पिताक संग वार्ता कऽ रहल छलीह । ओ शत्रु पक्षक जतेक समाचार वार्तालाप क क्रम मे भरत सँ पावि सकल छलीह सभटा पृथ्वीराज कें कहि देलथिन ।

पृथ्वीराज एहन कार्य सम्पन्न करवाक हेतु अपन गरदनि सँ मोती क माला उतारि जयन्ती कें दऽ देलथिन । पृथ्वीराज क सैनिक निश्चित योजनानुसार शत्रुदलपर आक्रमण करवाक हेतु प्रस्थान कऽ देने छल आ एक दल भरत कें पकड़वाक हेतु बिदा भऽ गेल छल ।

जयन्ती आपस आवि गेलीह । हुनक आँखि सँ अविरल

अश्रुक धारा प्रवाहित भऽ रहल छलनि । मोतीक माला रास्ते मे टूटि कऽ धूलिकण मे मिलि गेल छलनि ।

युद्ध क समाचार इतिहास क पृष्ठपर अंकित अछि जे कोनो प्रकारें भरत कें जीवित अवस्था मे उपस्थित करवाक आदेश पृथ्वीराज क छलनि, मुदा उपस्थित कयल गेल ओकर मृत-रक्ताक्त शरीर ! पृथ्वीराज जयन्ती कें बजा पटौलनि । जयन्ती क पहुँचलाक बाद पृथ्वीराज वाजि उठलाह - “वहीन ! ई विजय मात्र अहांक कारण सँ भेल अछि । जे देश-दोही सम्पूर्ण देशकें नष्ट करवाक हेतु प्रस्तुत छल संयोग सँ ओकर मृत्यु भऽ गेलैक । अपराध क समुचित दण्ड भेटि गेलैक । आव कहू—अहां कें कोन पुरस्कार सँ पुरस्कृत कयल जाय ?”

प्राणप्रिय भरतक शव देखि आ पृथ्वीराजक उक्ति सुनि जयन्ती कनियों विचलित नहि भेल छलीह । बाहर सँ ओ निश्चित रूपें अविचलित छलीह, किन्तु अन्तर सँ वेदना-मिश्रित विचित्र भाव सँ अभिभूत छलीह ।

जयन्ती वाजि उठलीह—“कोनो पुरस्कार प्राप्त करवाक कामना हमरा नहि अछि महाराज ! मात्र एकटा प्रार्थना अछि—कृपा-पूर्वक भरत क मृत शरीर अभीष्ट स्थान धरि लऽ जयवाक आज्ञा देल जाय ।”

जयन्ती क मुख सँ एहन वार्ता सुनि पृथ्वीराज आश्चर्यित भऽ गेलाह । ओ जयन्ती क पिता क दिस मुँह करैत वाजि उठलाह—“ई निर्वोध बालिका की कहि रहल अछि ?”

जयन्तीक पिता उत्तर मे वाजि उठलाह—“महाराज ! जयन्तीक प्रार्थना स्वीकार कयल जाय ।”

पृथ्वीराज वजलाह—“मुदा हम वड़ असमंजसमे छी—
भरत जयन्तीक के छलैक ?”

—“ई सभ नहि मुनल जाय, सँह उचित होयत महाराज !”

—“बैस ! तखन राजाज्ञा अछि, जयन्तीक इच्छा पूर्ण
कयल जाय ।”

दोसर दिन सन्ध्याकाल धरि भरत सिंहक समाधि निर्मित
भऽ गेल । वैह ई समाधि थिक । ओही राति ई नीमक गाछ
रोपल गेल छलैक ।

एतवा कहैत युवतीकें बकौर लागि जयतैक । एहन समयमे
अहाँ युवती सँ पूछि बैसव “मुदा, अहाँ के थिकहुँ ई कि एक ने
कहलहुँ ? के थिकहुँ अहाँ ?”

युवती एकदम मौन भऽ जयतीह आ अहाँ निनिमेष भावसँ
ओकरा तकैत रहव । ओकर मुँह दिस तकैत-तकैत अहाँक
आँखि पथरा जायत । आत्मस्थ भेलाक बाद जखन अहाँक
आँखि खुलत तँ ककरो कतहु नहि देखि सकव । तखन अहाँक
मुँह सँ अनायास बहरा जायत—“ई समाधि बजैत अछि ।”

कुपुरुष क खोज

सुश्री इला रानी सिंह

बहुत दिन पूर्वक घटना थीक। रामचन्द्र जनकपुर गेल छलाह। सारि-सरहोजिक दुलार और सासु-ससुर क सद्भाव हुनका मोहित कए लेलकन्हि। मिथिला क मखानक खीर, भेंटक लावा, अरिकोंचक साग, तिलकोर क तरल और बड़ी, बड़ एवं बजकाक कथे जुनि पुत्र। ई सब अयोध्या मे कतय पवितथि ? त'हूँपर नित-नित ललना सभक मधुर गीत सुनै लेल भेंटन्हि—उचिती, मिनती, जोग, कोहबर, परातकाली और जानी की-की दन। नित्य नाना कौतुक, नित्य नाना रस-प्रसंग। रामचन्द्र अयोध्या क सुधि विसरि गेलाह। सासुरक माया हैतहि छैक तेहने ! सप्ताह पर सप्ताह और मास पर मास वितय लागल, किन्तु राम सासुर सँ जैवाक नामहि नहि लेथि।

महाराज दशरथ कें भेलन्हि भारी चिन्ता। ओ देखलन्हि जे ई तँ भारी अन्हेर भेल। मिथिला क भूमियें तेहन लोभा-ओन होइ छैक जे राम कतहुँ घर-जमैया ने भए जाथि। ओ

कुलगुरु वशिष्ठ सँ पुद्गलधिन्ह । वशिष्ठ क सम्मति सँ एक कूट पत्र पठाओल गेल, राजा जनक क ओहि ठाम । पत्र मे चारि वस्तुक मांग कएल गेल छलैक । जनक सँ अनुरोध भेल छलन्हि जे एक कुपक्षी, एक कुभोज्य (कदन्न), एक कुपात्र एवं एक कुपुरुष पठा देल जाय ।

जनक जी पत्र पावि मोच मे पड़ि गेलाह । ओ मंत्री कें वजा आदेश देल जे सब वस्तु क संग्रह हो । एतना कहि राजा जनक आन-आन महत्वापूर्ण काज मे संलग्न भए गेलाह । एमहर कुपक्षी क खोज होमय लागल । लोग सब वाजल जे कुपक्षी क रूप मे कौआ कें ग्रहण करवाक चाही । कौआ वजाओल गेल । मंत्री महोदय आज्ञा देलथिन्ह जे तों जाह अयोध्या दिस, एहि ठाम तोहर कोनो काज नहि । तों कुपक्षी छँ, तैं तोहर वजाहटि अयोध्या मे भेल छौं । कौआ वाजल—मंत्री जी, हम कुपक्षी कोना छी ? हम तँ भोरे-भोर उठि कए लोक सब कें जगावैत छी, गन्दगी सब साफ करैत छी और रोग फैला-वैवाला कीड़ा-मकोड़ा सब कें मारि मारि कए खा जाइत छी । हमरा पंडित लोकनि भविष्यक ज्ञाता कहैत छथि । हम कुपक्षी कोना भेलहुँ !

मंत्री पुद्गलधिन्ह -“तखन कुपक्षी के थीक ?

कौआ वाजल—“कुपक्षी अछि उल्लू । ओ काजक बेर (भरि दिन) नुकाएल रहैत अछि । ओ सबक खाली मुहें दुर्नैत रहैत अछि । समाजक कोनो काज नहि करैत अछि । मंत्री मानि गेलाह ।

फेर कुभोज्य अन्नक खोज होमय लागल । लोग मरुआक नाम लेलक । मरुआ बेचारा बजाओल गेल । ओकरो तेहने आशा भेटलैक ।

मरुआ बाजल—हम कदन्न नहि छी । हम तँ गरीब लोक-निक एकमात्र सहारा थिकहुँ । हमरा नहि रहने तँ मिथिलाक लाख-लाख जनता अन्न बिना कलहन्त कए कए मरि जायत । हम माछक संग खैवा मे बड़ सोन्हगर लगैत छी । सहजहि उपजि जाइत छी—ऊसरो जगह मे । हमरा तैयारहु करवा मे वेसी समय नहि लगैत छैक । लोग धड़ द' कूटि-पीसि कए खा लैत अछि । हमरा कोना कुभोज्य मानल जाइत छैक ?

मंत्री बजलाह—तखन कुभोज्य कोन अन्न ?

मड़ुआ बाजल—कुभोज्य अछि कुशियार । ओकर उप-जायब, जोतब, पेड़ब सब कष्टकर । ओकर शक्कर-चीनी सँ बनल मिष्ठान्न आदि गरीब लोकनि छुबियो धरि नहि सकैत अछि । मंत्री मानि गेलाह और कुशियारहि कें अयोध्या पठे-बाक निर्णय भए गेल ।

आब कुपात्रक खोज होमय लागल । लोक सभक सुभाब पर खापड़ि कें बजाओल गेल । मंत्री खापड़ि कें कहलथिन्ह जे तौ कुपात्र छें । तँ तोरा मिथिला छोड़ि अयोध्या जाय पड़तौक । राजा दशरथ कें कुपात्रक प्रयोजन छन्हि !

खापड़ि बाजल—हम कुपात्र कोना छी ? हमरा नहि भेने कोनो चीज भूँजल कोना जायत ? भुंजे-फुटहा खा कए तँ गरीब गुरबाक गुजर होइत छैक । हमरा कारी खटखट देखि कए कुपात्र जुनि बुझल जाय सरकार । हम बड़ काजक वस्तु छी !

मंत्री पुछलथिन्ह—तखन कुपात्र के थीक ?

खापड़ि बाजल—कुपात्र थीक कलालीक बौडुकी (पियाला) । ओ दारू-ताड़ी पिवाक काज मे अवैत छैक । लोक सब के धर्म-च्युत करैत अछि, बौड़ा दैत अछि । ओकरहि अयोध्या पठा देल जाय । मंत्री मानि गेलाह ।

आब कुपुरुषक खोज होमय लागल । लोग सभ बाजल जे नट सँ बढ़ि कए कुपुरुष और के भए सकैत अछि ? नट बजा-ओल गेल ! ओकरा आज्ञा देल गेलैक जे तौ कुपुरुष छें । तँ तौ जो अयोध्या दिस । राजा दशरथ केँ तोहर काज छन्हि ।

नट बाजल—हम कुपुरुष कोना ? हम तँ नाना कौतुक देखा-देखा कए लोक-रंजन करैत छी । अनेक प्रकारक कसरत कए शरीर केँ लचकगर बनौने रहैत छी । कतेक प्रकारक अभिनय सेहो करैत छी । हमरहि पूर्वज छलाह ऋषि भरत ।

मंत्री बजलाह—तखन तौही बाज जे कुपुरुष के ?

नट बाजल—कुपुरुष तँ ओ जे सासुर मे रहि कए दिन काटय । की जनकपुर मे एहन कोनो लोक नहि अछि जे सासुर मे रहैत हो ?

ई उत्तर सुनितहि सब दंग रहि गेलाह । मन्त्रिपरिषद् तँ अवाक् । राम केँ सेहो समझवा-बुझवा मे भांगठ नहि रहि गेलन्हि, मधुश्रावणी लग मे रहितहुँ और सासु-सरहोजिक आग्रह रहितहुँ बेचारे पराते उठि-पुठि कए अयोध्या दिस विदा भेलाह ।

माटिक सुराही

उदय सिंह

मैथिल लोकनि कुशाग्र बुद्धि क लेल प्रख्यात होइत छथि । ताहू मे महाकवि कालिदास क त कथे जुनि पूछ । सामान्य मैथिल परिवार मे जन्म-ग्रहण कए ई ततेक यश एवं प्रतिष्ठा अर्जन कएलन्हि जे कोनो लोकक लेल स्पृहा क विषय भ' सकैछ ।

यद्यपि हुनक प्रामाणिक इतिवृत्त एखनि धरि उपलब्ध नहि भेल छैक तथापि हुनका विषय मे नाना जनश्रुति वा किंवदन्ती प्रचलित अछि । तदनुसार कालिदास छलाह कुरूप । मुख पर कान्ति तथा प्रखर प्रतिभा क चिन्ह, लेकिन वर्ण कारी एवं मुखक आकृति बेडौल । हुनक यश सुनि-सुनि देशक कोन-कोन सँ लोक हुनक दर्शनार्थ अवैत छल । कविक काव्य-सौष्ठव देखि लोकक मन मे ई धारणा होइत छलैक जे ओ निश्चय अत्यन्त रूपवान् हेताह । किन्तु कालिदास केँ देखला उत्तर सब निराश भ' जाइत छल । एकर दुःख महाराज विक्रमादित्यहुक मन मे छलन्हि । अपन दरबार क नवरत्न मे श्रेष्ठ रत्न क कुरूपता पर ओ क्षुब्ध छलाह । कैक बेर ओ कालिदास केँ इयेह ल' कए खौभा चुकल छलाह ! अवसर भेटितहि ओ चुटकी लेबा सँ बाज नहि अवैत छलाह ।

एक दिन दुपहर के अलसाएल तथा अर्द्ध-शयन-रत अवस्था में महाराज बजलाह—“कालिदास, अपनेक वास्ते हमरा दुःख एवं सहानुभूति अछि ।” कवि बुझितहुँ अनजान जेकाँ पुछल-थिन्ह—“से की महाराज ?” “अपनेक सब किछु नीक, लेकिन ई रूपे टा! दूर-दूर सँ अबैवला अपनेक भक्त सब अपने के देखि कए उदास भए फिरि जाइत छथि ।” महाराज बजलाह । कवि बजलाह, “से त सत्यहि चिन्ता क बात सरकार ! भगवान् क देल एहि चेहरा के बदलि सकब जौ संभव रहितैक त हम अवश्यहि बदलि लितहुँ ।”

तावत् कथे प्रसंग में राजा केँ पियास लागि गेलन्हि । कक्ष एकदम एकान्त छलैक । एहि दू गोटेक अतिरिक्त आन क्यो नहि छल । कवि सोना क गिलास में सुराही सँ ठंढा जल ढारि कए राजा केँ देलथिन्ह । दू-चारि घोंट पीबि राजा लगे में मंचिका पर गिलास ध’ देलथिन्ह, जाहि सँ पुनः पियास लगला उत्तर कवि केँ कष्ट नहि देबऽ पड़य । तत्पश्चात् बहुत देर धरि नाना प्रकारक गप्प चलैत रहल । राजा केँ पुनः पियास लागि गेलन्हि । गिलास उठा, एकहि घोंट पीलन्हि कि मुख विकृत भ’ गेलन्हि । सोनाक गिलास क जल एकदम गरम भ’ गेल छलैक । कवि बुझि गेलाह जे हिनका शीतल जल चाही ।

कवि केँ नीक सुयोग भेट गेलन्हि । ओ बिहुँसैत बजलाह, “देखलियैक महाराज, तुच्छ माटिक करिया सुराही सँ देल जल केहन शीतल एवं तृप्तिदायक लागल, किन्तु सोनाक बासन में राखल पानि कंठ सँ नीचा नहि उतरि सकल । तँ बुझल जाव जे भीतर क सद्गुण बढ़िया वा रूपक बाहरी चाकचक्य ?